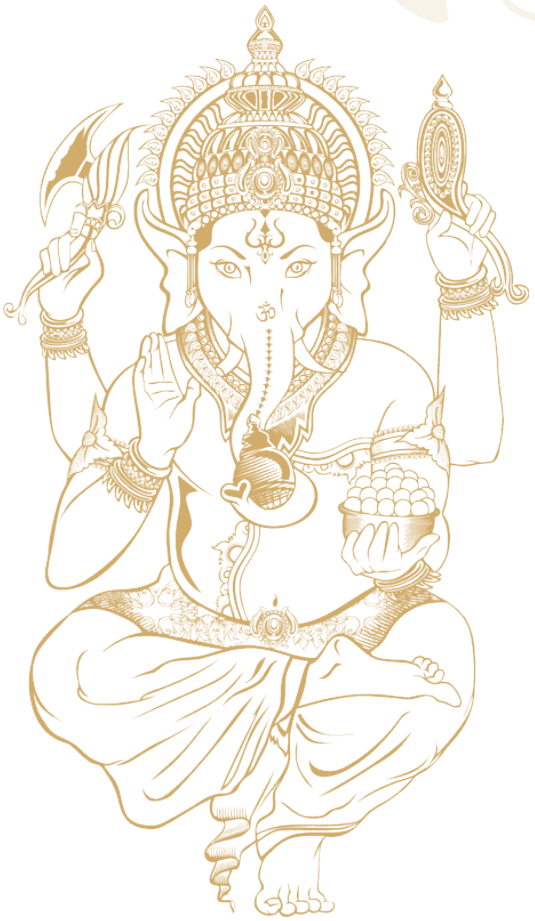

Mr.

Ms.

Model: Web-MatchAnalysis

Order No: 119179201

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
01/10/1991	जन्म तिथि	28/04/1993
मंगलवार	दिन	बुधवार
घंटे 11:15:00	जन्म समय	11:02:00 घंटे
घटी 11:54:13	जन्म समय(घटी)	12:02:29 घटी
India	देश	India
Mumbai	स्थान	Delhi
18:58:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
72:50:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:38:40	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:29:18	सूर्योदय	05:43:23
18:27:30	सूर्यास्त	18:54:23
23:44:47	चित्रपक्षीय अयनांश	23:46:05

वृश्चिक	लग्न	कर्क
मंगल	लग्न लग्नाधिपति	चन्द्र
मिथुन	राशि	मिथुन
बुध	राशि-स्वामी	बुध
आर्द्रा	नक्षत्र	पुनर्वसु
राहु	नक्षत्र स्वामी	गुरु
4	चरण	3
परिघ	योग	धृति
कौलव	करण	गर
छ-छत्रपति	जन्म नामाक्षर	हा-हर्षा
तुला	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृष
शूद्र	वर्ण	शूद्र
मानव	वश्य	मानव
श्वान	योनि	मार्जार
मनुष्य	गण	देव
आद्य	नाड़ी	आद्य
सिंह	वर्ग	मेष

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
राहु 4वर्ष 5मा 22दि	18:13:59	वृश्चि	लग्न	कर्क	02:39:30	गुरु 6वर्ष 9मा 17दि
शनि	13:48:39	कन्या	सूर्य	मेष	14:10:43	बुध
24/03/2012	16:40:57	मिथु	चंद्र	मिथु	27:40:04	14/02/2019
24/03/2031	25:49:55	कन्या	मंगल	कर्क	06:20:53	14/02/2036
शनि 28/03/2015	11:51:41	कन्या	बुध	मीन	25:51:21	बुध 13/07/2021
बुध 05/12/2017	10:10:09	सिंह	गुरु व	कन्या	12:39:43	केतु 10/07/2022
केतु 13/01/2019	02:43:38	सिंह	शुक्र	मीन	10:34:27	शुक्र 10/05/2025
शुक्र 15/03/2022	06:27:35	मक व	शनि	कुंभ	05:05:08	सूर्य 16/03/2026
सूर्य 25/02/2023	21:24:05	धनु	राहु	वृश्चि	18:50:35	चन्द्र 16/08/2027
चन्द्र 25/09/2024	21:24:05	मिथु	केतु	वृष	18:50:35	मंगल 12/08/2028
मंगल 04/11/2025	16:08:57	धनु	हर्ष व	धनु	28:25:20	राहु 01/03/2031
राहु 10/09/2028	20:14:56	धनु	नेप व	धनु	27:22:37	गुरु 06/06/2033
गुरु 24/03/2031	24:55:52	तुला	प्लूटो व	वृश्चि	00:49:47	शनि 14/02/2036

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:44:47 चित्रपक्षीय अयनांश 23:46:05

लग्न-चलित

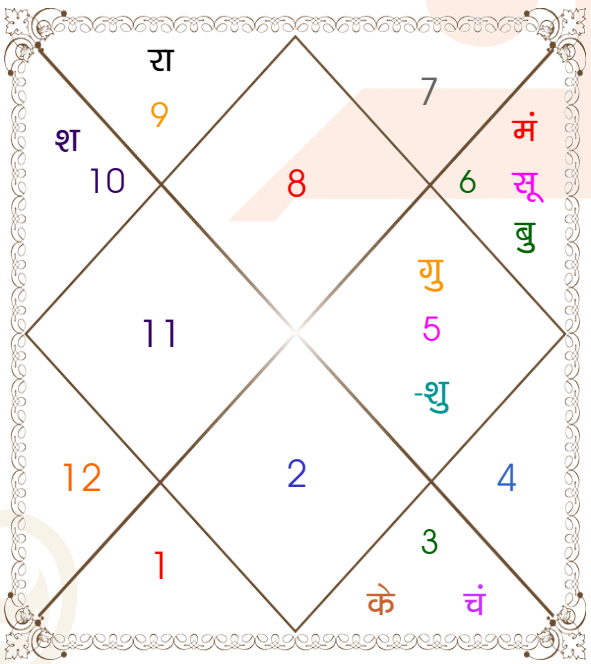

लग्न-चलित

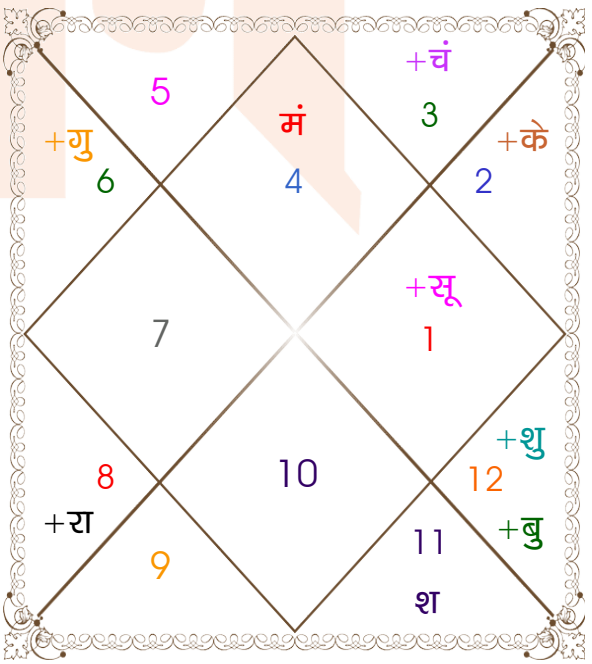

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

चलित अंश

भाव मध्य		भाव संधि		भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
वृश्चि	18:13:59	वृश्चि	04:09:43	1	मिथु	16:13:19	कर्क	02:39:30
धनु	20:05:26	धनु	04:09:43	2	कर्क	16:13:19	कर्क	29:47:08
मक	21:56:52	मक	06:01:09	3	सिंह	13:20:57	सिंह	26:54:46
कुंभ	23:48:19	कुंभ	07:52:35	4	कन्या	10:28:35	कन्या	24:02:24
मीन	21:56:52	मीन	07:52:35	5	तुला	10:28:35	तुला	26:54:46
मेष	20:05:26	मेष	06:01:09	6	वृश्चि	13:20:57	वृश्चि	29:47:08
वृष	18:13:59	वृष	04:09:43	7	धनु	16:13:19	मक	02:39:30
मिथु	20:05:26	मिथु	04:09:43	8	मक	16:13:19	मक	29:47:08
कर्क	21:56:52	कर्क	06:01:09	9	कुंभ	13:20:57	कुंभ	26:54:46
सिंह	23:48:19	सिंह	07:52:35	10	मीन	10:28:35	मीन	24:02:24
कन्या	21:56:52	कन्या	07:52:35	11	मेष	10:28:35	मेष	26:54:46
तुला	20:05:26	तुला	06:01:09	12	वृष	13:20:57	वृष	29:47:08

तारा चक्र

शतभिषा	स्वाति	आर्द्रा	**जन्म**	पुनर्वसु	विशाखा	पू०भाद्रपद
पू०भाद्रपद	विशाखा	पुनर्वसु	**सम्पत**	पुष्य	अनुराधा	उ०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	अनुराधा	पुष्य	**विपत**	आश्लेषा	ज्येष्ठा	रेवती
रेवती	ज्येष्ठा	आश्लेषा	**क्षेम**	मघा	मूल	अश्विनी
अश्विनी	मूल	मघा	**प्रत्यारि**	पू०फाल्गुनी	पूर्वाषाढ़ा	भरणी
भरणी	पूर्वाषाढ़ा	पू०फाल्गुनी	**साधक**	उ०फाल्गुनी	उत्तराषाढ़ा	कृतिका
कृतिका	उत्तराषाढ़ा	उ०फाल्गुनी	**वध**	हस्त	श्रवण	रोहिणी
रोहिणी	श्रवण	हस्त	**मित्र**	चित्रा	धनिष्ठा	मृगशिरा
मृगशिरा	धनिष्ठा	चित्रा	**अतिमित्र**	स्वाति	शतभिषा	आर्द्रा

चलित कुंडली

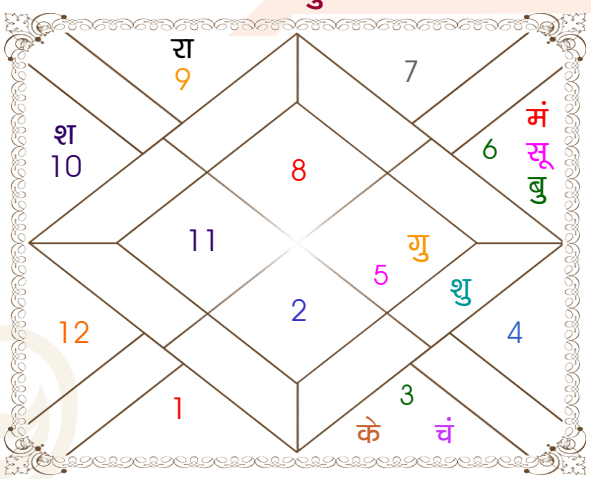

चलित कुंडली

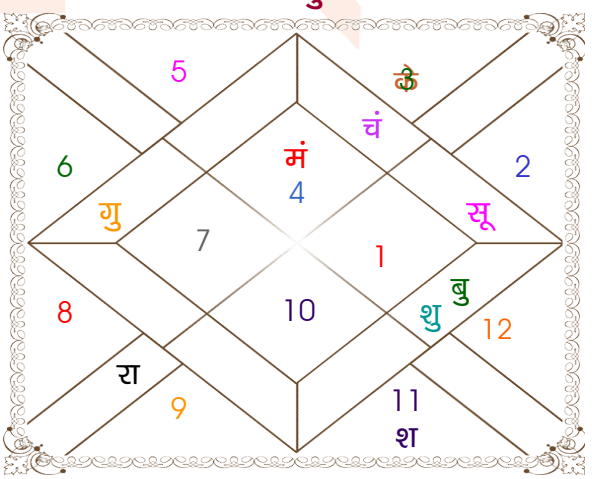

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

चन्द्र कुंडली

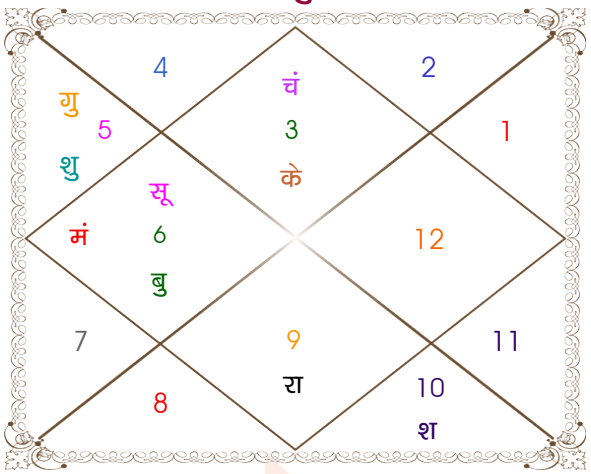

चन्द्र कुंडली

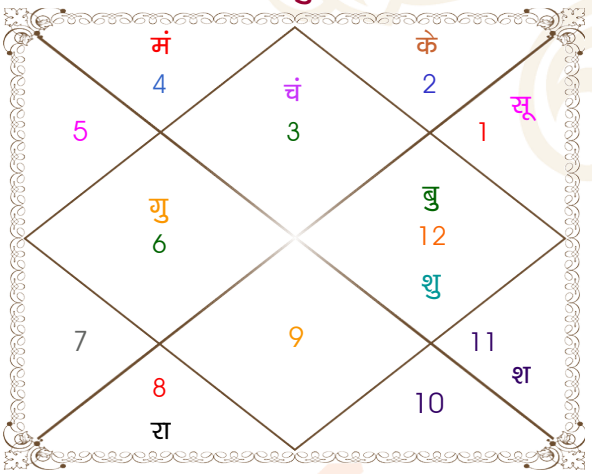

सूर्य कुंडली

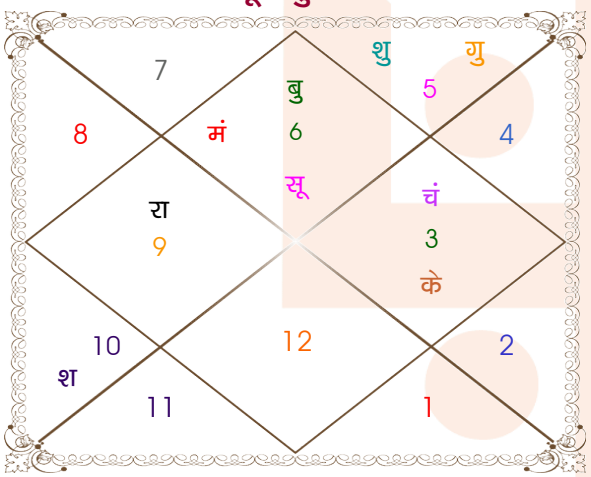

सूर्य कुंडली

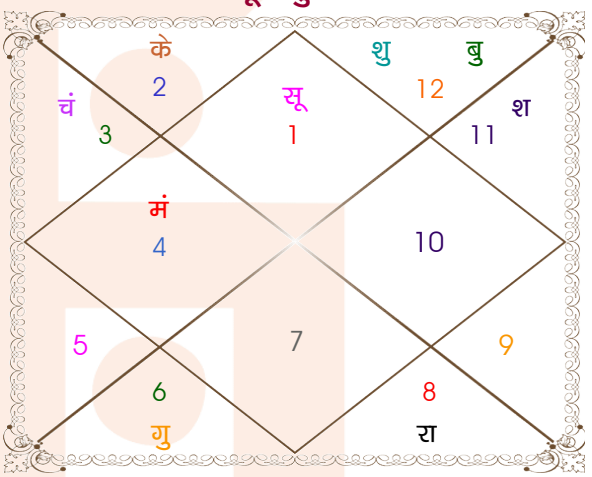

नवमांश कुंडली

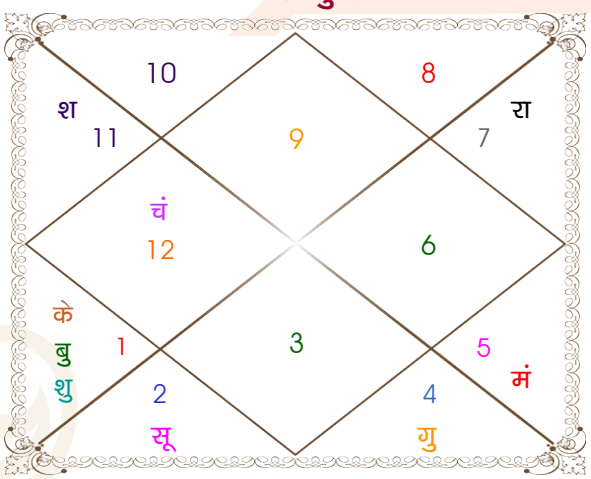

नवमांश कुंडली

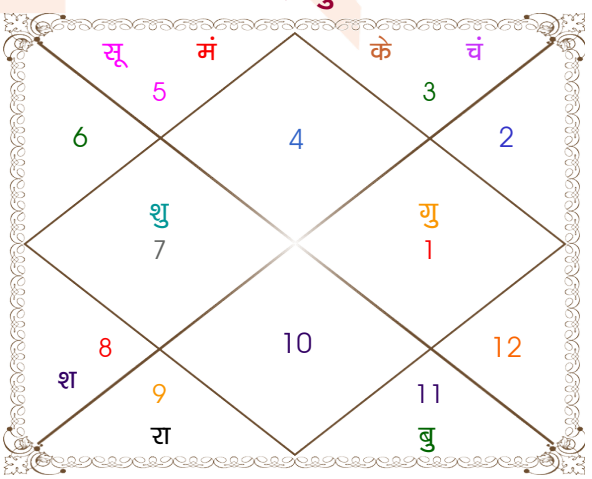

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

लग्न कुंडली

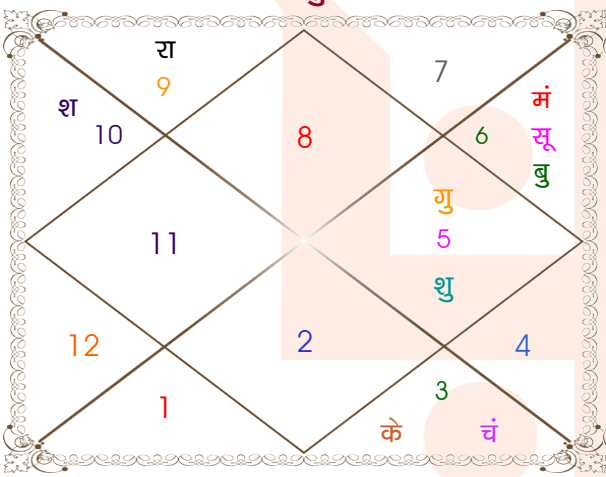

देह विचारः

लग्न कुंडली

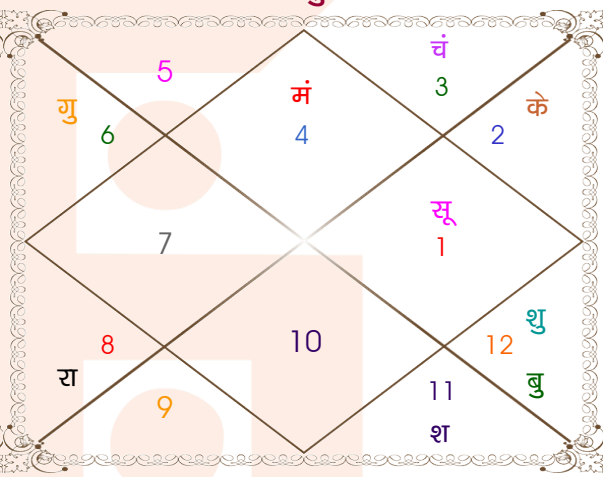

देह विचारः

होरा कुंडली

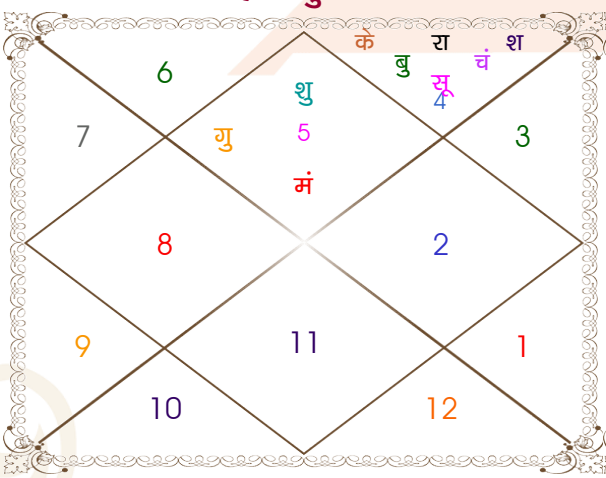

सम्पदाविचारः

होरा कुंडली

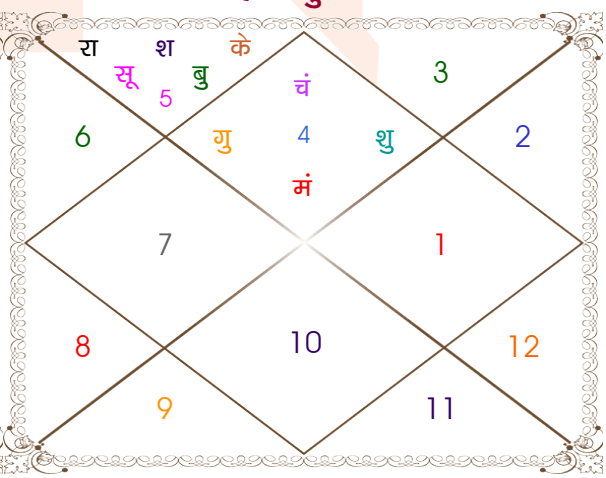

सम्पदाविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

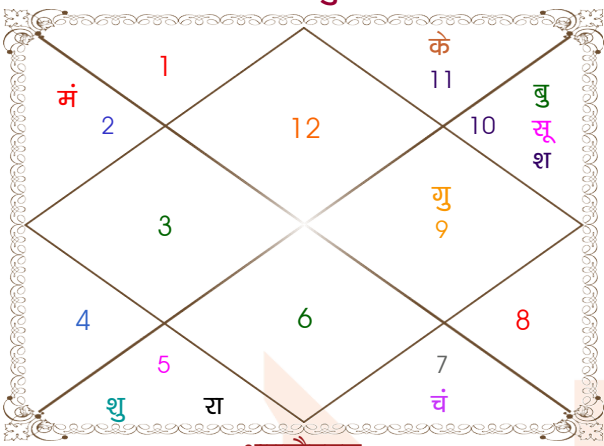

भ्रातृसौख्यम

द्रेष्काण कुंडली

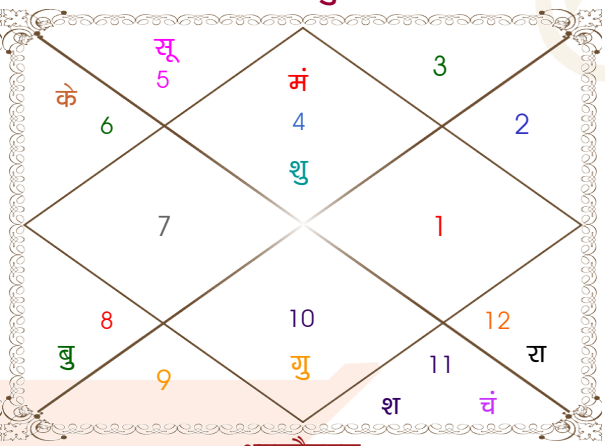

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

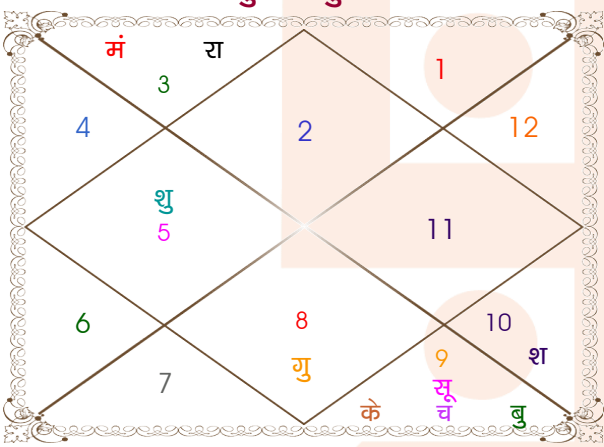

भाग्यविचारः

चतुर्थांश कुंडली

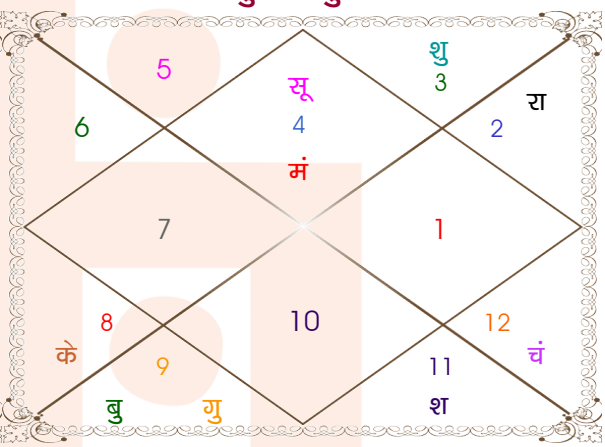

भाग्यविचारः

सप्तमांश कुंडली

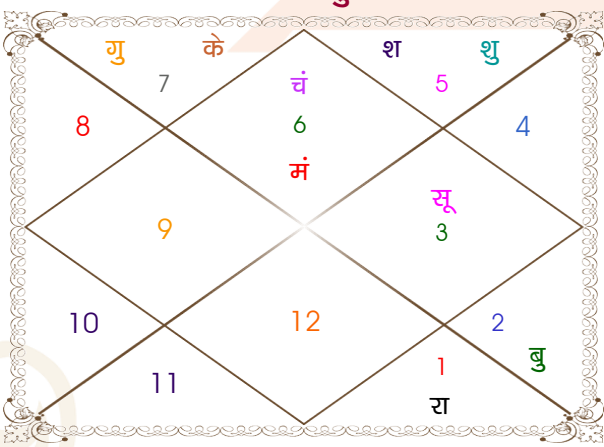

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

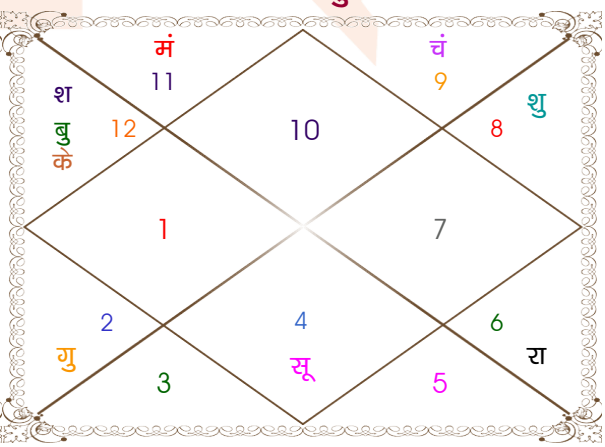

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

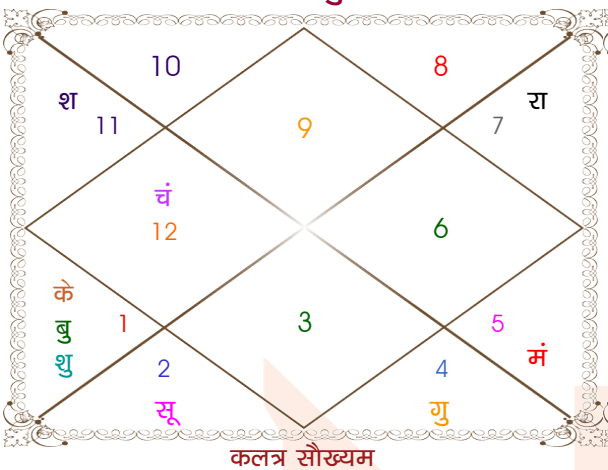

कलत्र सौख्यम

नवमांश कुंडली

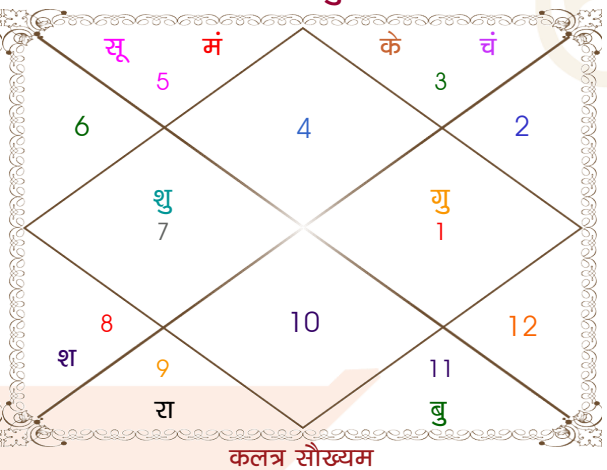

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

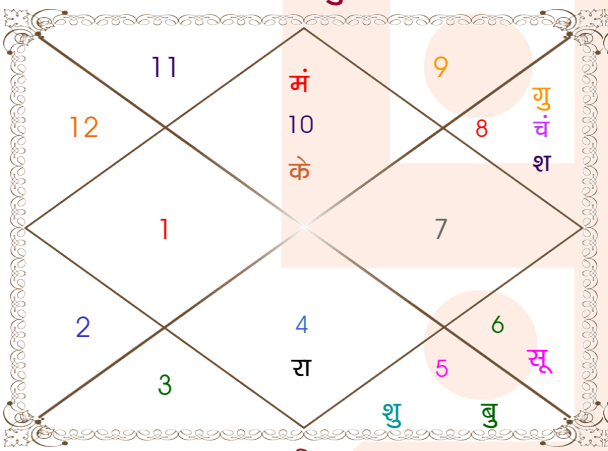

राज्यविचारः

दशमांश कुंडली

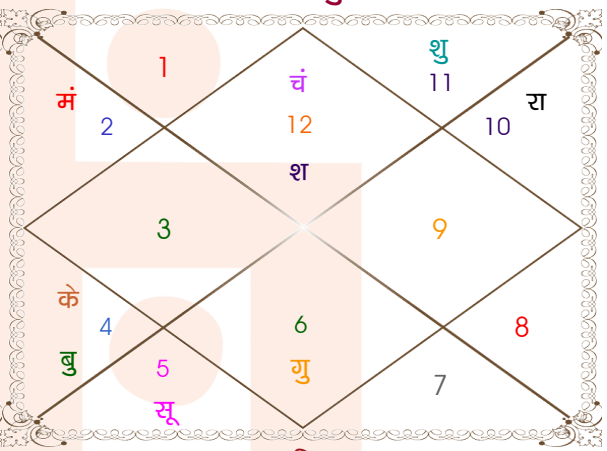

राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली

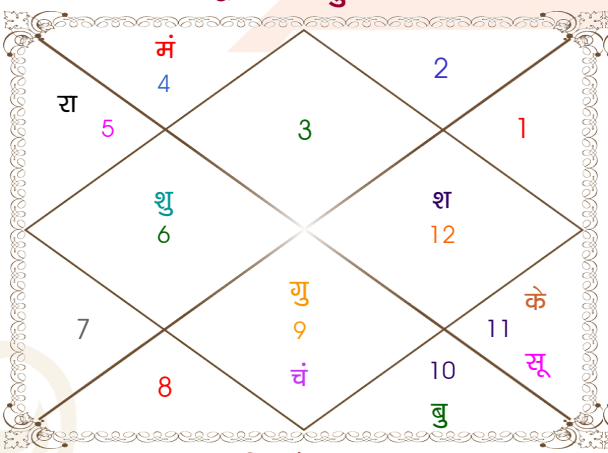

पितृसौख्यम

द्वादशांश कुंडली

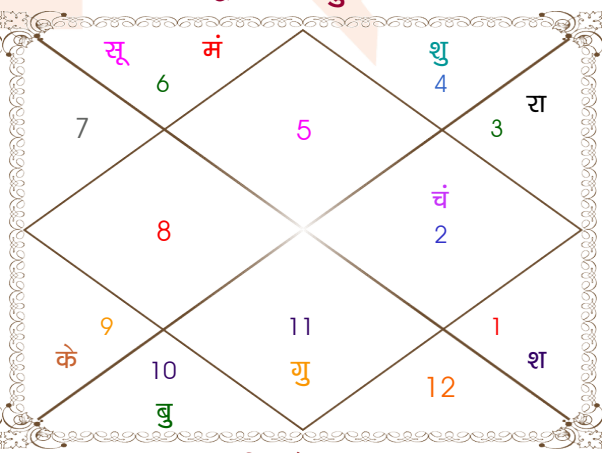

पितृसौख्यम

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली

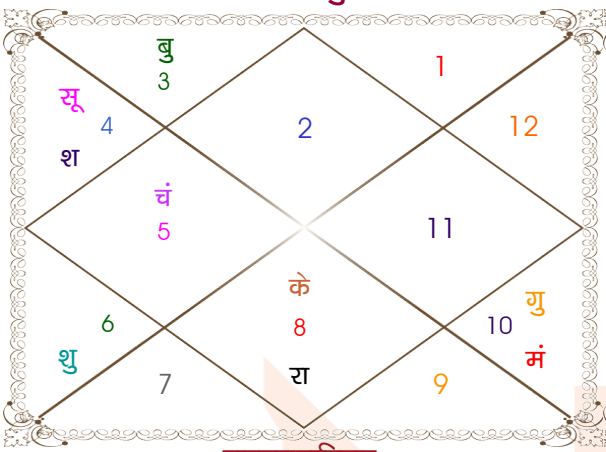

वाहनसुखविचारः

षोडशांश कुंडली

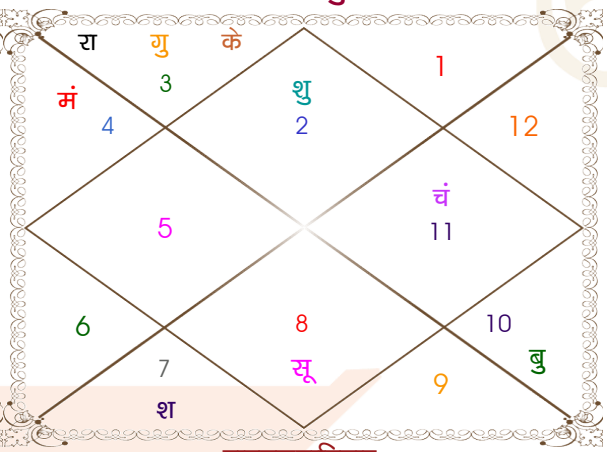

वाहनसुखविचारः

त्रिंशांश कुंडली

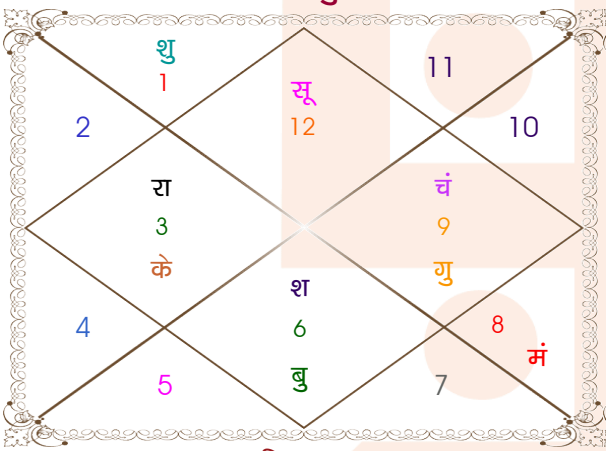

अरिष्टज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

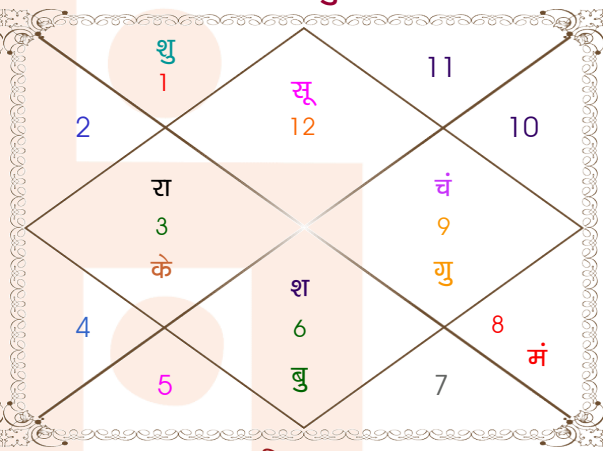

अरिष्टज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली

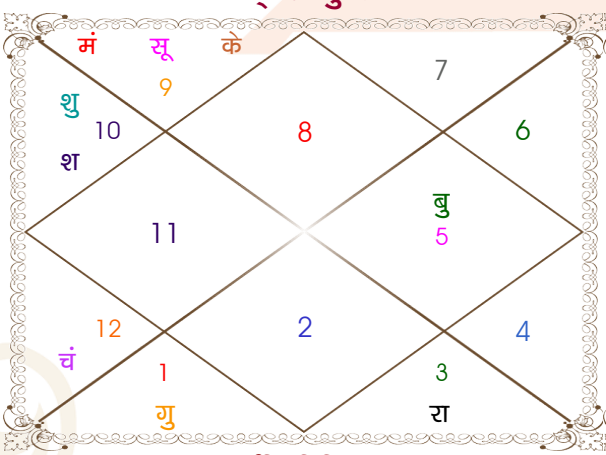

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

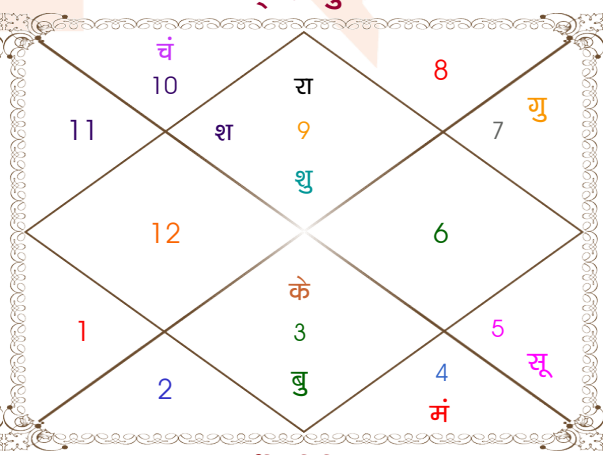

सर्वास्थितिविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : राहु 4 वर्ष 3 मास 30 दिन

के.पी. अयनांश : 23:38:18

फॉरच्युना : सिंह 21:12:47

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कन्या	13:55:08	बुध	चंद्र	गुरु	गुरु
चंद्र		मिथु	16:47:26	बुध	राहु	शुक्र	शनि
मंगल		कन्या	25:56:24	बुध	मंगल	राहु	चंद्र
बुध		कन्या	11:58:10	बुध	चंद्र	राहु	राहु
गुरु		सिंह	10:16:38	सूर्य	केतु	शनि	शुक्र
शुक्र		सिंह	02:50:07	सूर्य	केतु	शुक्र	बुध
शनि	व	मक	06:34:04	शनि	सूर्य	बुध	गुरु
राहु		धनु	21:30:34	गुरु	शुक्र	गुरु	चंद्र
केतु		मिथु	21:30:34	बुध	गुरु	गुरु	मंगल
हर्ष		धनु	16:15:26	गुरु	शुक्र	चंद्र	चंद्र
नेप		धनु	20:21:25	गुरु	शुक्र	गुरु	शनि
प्लूटो		तुला	25:02:21	शुक्र	गुरु	बुध	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृश्चि	18:20:28	मंगल	बुध	बुध	शनि
2	धनु	18:18:22	गुरु	शुक्र	राहु	राहु
3	मक	20:29:09	शनि	चंद्र	शुक्र	शुक्र
4	कुंभ	23:54:48	शनि	गुरु	बुध	बुध
5	मीन	25:31:37	गुरु	बुध	राहु	शुक्र
6	मेष	23:22:40	मंगल	शुक्र	शनि	मंगल
7	वृष	18:20:28	शुक्र	चंद्र	बुध	शुक्र
8	मिथु	18:18:22	बुध	राहु	चंद्र	राहु
9	कर्क	20:29:09	चंद्र	बुध	शुक्र	गुरु
10	सिंह	23:54:48	सूर्य	शुक्र	शनि	गुरु
11	कन्या	25:31:37	बुध	मंगल	राहु	शुक्र
12	तुला	23:22:40	शुक्र	गुरु	शनि	राहु

भाव कुंडली

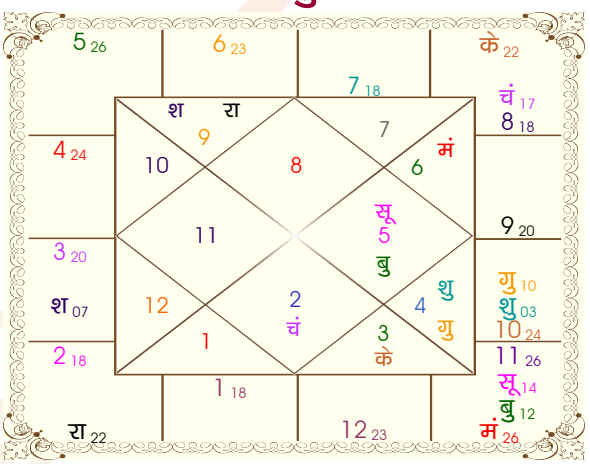

भोग्य दशा काल : गुरु 6 वर्ष 8 मास 0 दिन

के.पी. अयनांश : 23:39:36

फॉरच्युना : कन्या 16:15:20

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मेष	14:17:12	मंगल	शुक्र	शुक्र	राहु
चंद्र		मिथु	27:46:33	बुध	गुरु	शुक्र	गुरु
मंगल		कर्क	06:27:22	चंद्र	शनि	बुध	मंगल
बुध		मीन	25:57:50	गुरु	बुध	राहु	चंद्र
गुरु	व	कन्या	12:46:12	बुध	चंद्र	राहु	शनि
शुक्र		मीन	10:40:56	गुरु	शनि	सूर्य	शनि
शनि		कुंभ	05:11:37	शनि	मंगल	सूर्य	गुरु
राहु		वृश्चि	18:57:04	मंगल	बुध	केतु	राहु
केतु		वृष	18:57:04	शुक्र	चंद्र	बुध	राहु
हर्ष	व	धनु	28:31:48	गुरु	सूर्य	मंगल	राहु
नेप	व	धनु	27:29:06	गुरु	सूर्य	चंद्र	मंगल
प्लूटो	व	वृश्चि	00:56:16	मंगल	गुरु	मंगल	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कर्क	02:45:59	चंद्र	गुरु	राहु	शुक्र
2	कर्क	25:56:00	चंद्र	बुध	राहु	चंद्र
3	सिंह	22:39:19	सूर्य	शुक्र	शनि	शुक्र
4	कन्या	24:08:53	बुध	मंगल	राहु	राहु
5	तुला	28:39:08	शुक्र	गुरु	शुक्र	केतु
6	धनु	02:14:10	गुरु	केतु	शुक्र	शनि
7	मक	02:45:59	शनि	सूर्य	गुरु	राहु
8	मक	25:56:00	शनि	मंगल	राहु	चंद्र
9	कुंभ	22:39:19	शनि	गुरु	शनि	शुक्र
10	मीन	24:08:53	गुरु	बुध	राहु	राहु
11	मेष	28:39:08	मंगल	सूर्य	मंगल	गुरु
12	मिथु	02:14:10	बुध	मंगल	केतु	राहु

भाव कुंडली

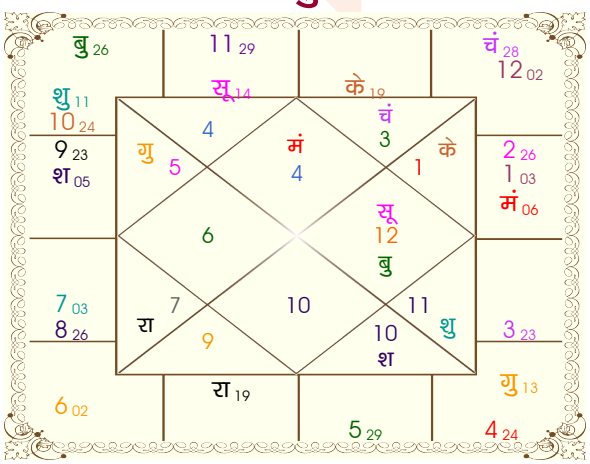

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल,
2	चंद्र, गुरु- शनि, राहु, केतु-
3	शनि-
4	शनि-
5	गुरु- केतु-
6	मंगल,
7	सूर्य, चंद्र, बुध, शुक्र- राहु-
8	बुध- गुरु, शुक्र, केतु,
9	सूर्य- चंद्र- बुध- गुरु, शुक्र, राहु, केतु,
10	सूर्य, बुध, शनि+
11	मंगल+ बुध-
12	शुक्र- राहु-

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र- मंगल, गुरु- शनि, केतु-
2	चंद्र- गुरु- केतु-
3	सूर्य- चंद्र, गुरु,
4	बुध, राहु-
5	सूर्य- शुक्र- राहु,
6	चंद्र- गुरु-
7	मंगल- शुक्र- शनि-
8	मंगल+ शुक्र+ शनि,
9	सूर्य, मंगल- शुक्र+ शनि-
10	सूर्य, चंद्र- बुध+ गुरु- राहु,
11	मंगल- शनि- केतु,
12	चंद्र, बुध, गुरु, राहु- केतु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	7, 9- 10,
चंद्र	2, 7, 9-
मंगल	1, 6, 11+
बुध	7, 8- 9- 10, 11-
गुरु	2- 5- 8, 9,
शुक्र	7- 8, 9, 12-
शनि	2, 3- 4- 10+
राहु	2, 7- 9, 12-
केतु	2- 5- 8, 9,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	3- 5- 9, 10,
चंद्र	1- 2- 3, 6- 10- 12,
मंगल	1, 7- 8+ 9- 11-
बुध	4, 10+ 12,
गुरु	1- 2- 3, 6- 10- 12,
शुक्र	5- 7- 8+ 9+
शनि	1, 7- 8, 9- 11-
राहु	4- 5, 10, 12-
केतु	1- 2- 11, 12,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	बुध
लग्न राशि स्वामी	मंगल
राशि नक्षत्र स्वामी	राहु
राशि स्वामी	बुध
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	गुरु
लग्न राशि स्वामी	चन्द्र
राशि नक्षत्र स्वामी	गुरु
राशि स्वामी	बुध
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	राहु
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

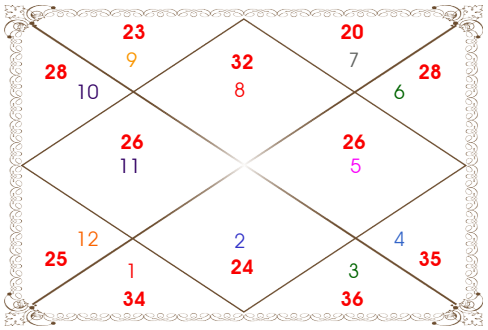

सर्वाष्टकवर्ग

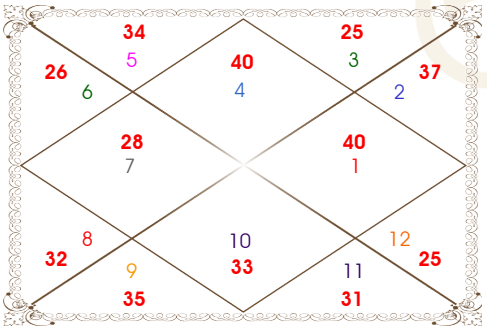

Mr.

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	2	6	5	4	2	1	4	2	4	3	2	39
गुरु	5	6	6	5	2	6	5	3	7	2	4	5	56
मंगल	4	1	4	6	3	3	2	5	1	6	2	2	39
सूर्य	6	3	4	5	4	4	4	3	3	5	4	3	48
शुक्र	5	6	4	5	5	4	3	5	4	3	4	4	52
बुध	5	3	5	6	5	6	3	5	3	5	4	4	54
चंद्र	5	3	7	3	3	3	2	7	3	3	5	5	49
बिन्दु	34	24	36	35	26	28	20	32	23	28	26	25	337
रेखा	22	32	20	21	30	28	36	24	33	28	30	31	335

Ms.

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	6	5	4	5	2	4	3	3	5	4	3	5	49
सूर्य	4	6	1	4	5	3	4	4	4	4	6	3	48
चंद्र	5	4	6	4	3	6	2	4	7	3	1	4	49
मंगल	3	4	2	4	7	3	3	2	2	4	5	0	39
बुध	5	5	1	6	6	3	4	4	4	4	6	6	54
गुरु	8	3	4	8	4	1	5	5	6	6	3	3	56
शुक्र	4	7	5	5	3	4	4	6	3	4	3	4	52
शनि	5	3	2	4	4	2	3	4	4	4	4	0	39
बिन्दु	40	37	25	40	34	26	28	32	35	33	31	25	386
रेखा	24	27	39	24	30	38	36	32	29	31	33	39	382

शोध्य पिंड - Mr.

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	54	127	87	84	153	68	82
ग्रह पिंड	45	25	105	108	82	40	69
शोध्य पिंड	99	152	192	192	235	108	151

शोध्य पिंड - Ms.

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	96	77	105	114	148	99	52	53
ग्रह पिंड	65	33	65	52	70	65	23	47
शोध्य पिंड	161	110	170	166	218	164	75	100

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा

राहु 4 वर्ष 5 मास 22 दिन

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
01/10/1991		24/03/1996		24/03/2012	
24/03/1996		24/03/2012		24/03/2031	
	00/00/0000	गुरु	12/05/1998	शनि	28/03/2015
	00/00/0000	शनि	22/11/2000	बुध	05/12/2017
	00/00/0000	बुध	28/02/2003	केतु	13/01/2019
	00/00/0000	केतु	04/02/2004	शुक्र	15/03/2022
	01/10/1991	शुक्र	05/10/2006	सूर्य	25/02/2023
शुक्र	11/10/1992	सूर्य	24/07/2007	चंद्र	25/09/2024
सूर्य	04/09/1993	चंद्र	22/11/2008	मंगल	04/11/2025
चंद्र	06/03/1995	मंगल	29/10/2009	राहु	10/09/2028
मंगल	24/03/1996	राहु	24/03/2012	गुरु	24/03/2031

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
24/03/2031		24/03/2048		24/03/2055	
24/03/2048		24/03/2055		24/03/2075	
बुध	20/08/2033	केतु	20/08/2048	शुक्र	24/07/2058
केतु	17/08/2034	शुक्र	20/10/2049	सूर्य	24/07/2059
शुक्र	17/06/2037	सूर्य	25/02/2050	चंद्र	24/03/2061
सूर्य	24/04/2038	चंद्र	26/09/2050	मंगल	24/05/2062
चंद्र	23/09/2039	मंगल	22/02/2051	राहु	24/05/2065
मंगल	19/09/2040	राहु	12/03/2052	गुरु	23/01/2068
राहु	09/04/2043	गुरु	15/02/2053	शनि	24/03/2071
गुरु	15/07/2045	शनि	27/03/2054	बुध	22/01/2074
शनि	24/03/2048	बुध	24/03/2055	केतु	24/03/2075

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
24/03/2075		24/03/2081		24/03/2091	
24/03/2081		24/03/2091		24/03/2098	
सूर्य	12/07/2075	चंद्र	22/01/2082	मंगल	21/08/2091
चंद्र	11/01/2076	मंगल	23/08/2082	राहु	07/09/2092
मंगल	18/05/2076	राहु	22/02/2084	गुरु	14/08/2093
राहु	11/04/2077	गुरु	23/06/2085	शनि	23/09/2094
गुरु	28/01/2078	शनि	23/01/2087	बुध	20/09/2095
शनि	10/01/2079	बुध	23/06/2088	केतु	16/02/2096
बुध	17/11/2079	केतु	22/01/2089	शुक्र	17/04/2097
केतु	24/03/2080	शुक्र	23/09/2090	सूर्य	23/08/2097
शुक्र	24/03/2081	सूर्य	24/03/2091	चंद्र	24/03/2098

गुरु 6 वर्ष 9 मास 17 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
28/04/1993		14/02/2000		14/02/2019	
14/02/2000		14/02/2019		14/02/2036	
	00/00/0000	शनि	17/02/2003	बुध	13/07/2021
	00/00/0000	बुध	27/10/2005	केतु	10/07/2022
	00/00/0000	केतु	06/12/2006	शुक्र	10/05/2025
	28/04/1993	शुक्र	05/02/2010	सूर्य	16/03/2026
शुक्र	27/08/1994	सूर्य	18/01/2011	चंद्र	16/08/2027
सूर्य	16/06/1995	चंद्र	18/08/2012	मंगल	12/08/2028
चंद्र	15/10/1996	मंगल	27/09/2013	राहु	01/03/2031
मंगल	21/09/1997	राहु	03/08/2016	गुरु	06/06/2033
राहु	14/02/2000	गुरु	14/02/2019	शनि	14/02/2036

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
14/02/2036		14/02/2043		14/02/2063	
14/02/2043		14/02/2063		13/02/2069	
केतु	12/07/2036	शुक्र	15/06/2046	सूर्य	04/06/2063
शुक्र	11/09/2037	सूर्य	16/06/2047	चंद्र	03/12/2063
सूर्य	17/01/2038	चंद्र	13/02/2049	मंगल	09/04/2064
चंद्र	18/08/2038	मंगल	16/04/2050	राहु	04/03/2065
मंगल	14/01/2039	राहु	15/04/2053	गुरु	21/12/2065
राहु	02/02/2040	गुरु	15/12/2055	शनि	03/12/2066
गुरु	08/01/2041	शनि	14/02/2059	बुध	09/10/2067
शनि	17/02/2042	बुध	15/12/2061	केतु	14/02/2068
बुध	14/02/2043	केतु	14/02/2063	शुक्र	13/02/2069

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
13/02/2069		14/02/2079		14/02/2086	
14/02/2079		14/02/2086		15/02/2104	
चंद्र	15/12/2069	मंगल	13/07/2079	राहु	27/10/2088
मंगल	16/07/2070	राहु	31/07/2080	गुरु	22/03/2091
राहु	15/01/2072	गुरु	06/07/2081	शनि	26/01/2094
गुरु	16/05/2073	शनि	15/08/2082	बुध	15/08/2096
शनि	15/12/2074	बुध	13/08/2083	केतु	02/09/2097
बुध	15/05/2076	केतु	09/01/2084	शुक्र	03/09/2100
केतु	15/12/2076	शुक्र	10/03/2085	सूर्य	29/07/2101
शुक्र	15/08/2078	सूर्य	16/07/2085	चंद्र	28/01/2103
सूर्य	14/02/2079	चंद्र	14/02/2086	मंगल	15/02/2104

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु	
25/09/2024		04/11/2025		10/09/2028	
04/11/2025		10/09/2028		24/03/2031	
मंगल	19/10/2024	राहु	09/04/2026	गुरु	12/01/2029
राहु	19/12/2024	गुरु	26/08/2026	शनि	07/06/2029
गुरु	11/02/2025	शनि	07/02/2027	बुध	16/10/2029
शनि	16/04/2025	बुध	04/07/2027	केतु	09/12/2029
बुध	12/06/2025	केतु	03/09/2027	शुक्र	12/05/2030
केतु	06/07/2025	शुक्र	24/02/2028	सूर्य	28/06/2030
शुक्र	11/09/2025	सूर्य	16/04/2028	चंद्र	13/09/2030
सूर्य	01/10/2025	चंद्र	11/07/2028	मंगल	06/11/2030
चंद्र	04/11/2025	मंगल	10/09/2028	राहु	24/03/2031

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
10/05/2025		16/03/2026		16/08/2027	
16/03/2026		16/08/2027		12/08/2028	
सूर्य	25/05/2025	चंद्र	28/04/2026	मंगल	06/09/2027
चंद्र	20/06/2025	मंगल	28/05/2026	राहु	30/10/2027
मंगल	08/07/2025	राहु	14/08/2026	गुरु	17/12/2027
राहु	24/08/2025	गुरु	22/10/2026	शनि	13/02/2028
गुरु	04/10/2025	शनि	12/01/2027	बुध	04/04/2028
शनि	22/11/2025	बुध	26/03/2027	केतु	25/04/2028
बुध	05/01/2026	केतु	25/04/2027	शुक्र	24/06/2028
केतु	23/01/2026	शुक्र	21/07/2027	सूर्य	13/07/2028
शुक्र	16/03/2026	सूर्य	16/08/2027	चंद्र	12/08/2028

बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
24/03/2031		20/08/2033		17/08/2034	
20/08/2033		17/08/2034		17/06/2037	
बुध	27/07/2031	केतु	10/09/2033	शुक्र	06/02/2035
केतु	16/09/2031	शुक्र	10/11/2033	सूर्य	30/03/2035
शुक्र	10/02/2032	सूर्य	28/11/2033	चंद्र	24/06/2035
सूर्य	25/03/2032	चंद्र	28/12/2033	मंगल	23/08/2035
चंद्र	06/06/2032	मंगल	18/01/2034	राहु	25/01/2036
मंगल	28/07/2032	राहु	13/03/2034	गुरु	11/06/2036
राहु	07/12/2032	गुरु	01/05/2034	शनि	22/11/2036
गुरु	03/04/2033	शनि	27/06/2034	बुध	18/04/2037
शनि	20/08/2033	बुध	17/08/2034	केतु	17/06/2037

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
12/08/2028		01/03/2031		06/06/2033	
01/03/2031		06/06/2033		14/02/2036	
राहु	29/12/2028	गुरु	20/06/2031	शनि	09/11/2033
गुरु	03/05/2029	शनि	29/10/2031	बुध	28/03/2034
शनि	27/09/2029	बुध	23/02/2032	केतु	24/05/2034
बुध	06/02/2030	केतु	11/04/2032	शुक्र	04/11/2034
केतु	01/04/2030	शुक्र	27/08/2032	सूर्य	23/12/2034
शुक्र	04/09/2030	सूर्य	08/10/2032	चंद्र	15/03/2035
सूर्य	20/10/2030	चंद्र	16/12/2032	मंगल	12/05/2035
चंद्र	06/01/2031	मंगल	02/02/2033	राहु	06/10/2035
मंगल	01/03/2031	राहु	06/06/2033	गुरु	14/02/2036

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
17/06/2037		24/04/2038		23/09/2039	
24/04/2038		23/09/2039		19/09/2040	
सूर्य	03/07/2037	चंद्र	06/06/2038	मंगल	14/10/2039
चंद्र	29/07/2037	मंगल	06/07/2038	राहु	08/12/2039
मंगल	16/08/2037	राहु	22/09/2038	गुरु	25/01/2040
राहु	01/10/2037	गुरु	30/11/2038	शनि	22/03/2040
गुरु	12/11/2037	शनि	20/02/2039	बुध	13/05/2040
शनि	31/12/2037	बुध	04/05/2039	केतु	03/06/2040
बुध	13/02/2038	केतु	03/06/2039	शुक्र	02/08/2040
केतु	03/03/2038	शुक्र	28/08/2039	सूर्य	20/08/2040
शुक्र	24/04/2038	सूर्य	23/09/2039	चंद्र	19/09/2040

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
14/02/2036		12/07/2036		11/09/2037	
12/07/2036		11/09/2037		17/01/2038	
केतु	23/02/2036	शुक्र	21/09/2036	सूर्य	18/09/2037
शुक्र	19/03/2036	सूर्य	13/10/2036	चंद्र	28/09/2037
सूर्य	26/03/2036	चंद्र	17/11/2036	मंगल	06/10/2037
चंद्र	08/04/2036	मंगल	12/12/2036	राहु	25/10/2037
मंगल	16/04/2036	राहु	14/02/2037	गुरु	11/11/2037
राहु	09/05/2036	गुरु	12/04/2037	शनि	01/12/2037
गुरु	29/05/2036	शनि	18/06/2037	बुध	20/12/2037
शनि	21/06/2036	बुध	18/08/2037	केतु	27/12/2037
बुध	12/07/2036	केतु	11/09/2037	शुक्र	17/01/2038

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
19/09/2040		09/04/2043		15/07/2045	
09/04/2043		15/07/2045		24/03/2048	
राहु	06/02/2041	गुरु	28/07/2043	शनि	17/12/2045
गुरु	10/06/2041	शनि	06/12/2043	बुध	06/05/2046
शनि	05/11/2041	बुध	01/04/2044	केतु	02/07/2046
बुध	17/03/2042	केतु	20/05/2044	शुक्र	13/12/2046
केतु	10/05/2042	शुक्र	05/10/2044	सूर्य	31/01/2047
शुक्र	12/10/2042	सूर्य	15/11/2044	चंद्र	23/04/2047
सूर्य	28/11/2042	चंद्र	23/01/2045	मंगल	19/06/2047
चंद्र	13/02/2043	मंगल	12/03/2045	राहु	14/11/2047
मंगल	09/04/2043	राहु	15/07/2045	गुरु	24/03/2048

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
17/01/2038		18/08/2038		14/01/2039	
18/08/2038		14/01/2039		02/02/2040	
चंद्र	04/02/2038	मंगल	27/08/2038	राहु	13/03/2039
मंगल	16/02/2038	राहु	18/09/2038	गुरु	03/05/2039
राहु	20/03/2038	गुरु	08/10/2038	शनि	03/07/2039
गुरु	18/04/2038	शनि	01/11/2038	बुध	26/08/2039
शनि	22/05/2038	बुध	22/11/2038	केतु	18/09/2039
बुध	21/06/2038	केतु	01/12/2038	शुक्र	20/11/2039
केतु	03/07/2038	शुक्र	26/12/2038	सूर्य	10/12/2039
शुक्र	08/08/2038	सूर्य	02/01/2039	चंद्र	11/01/2040
सूर्य	18/08/2038	चंद्र	14/01/2039	मंगल	02/02/2040

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
24/03/2048		20/08/2048		20/10/2049	
20/08/2048		20/10/2049		25/02/2050	
केतु	01/04/2048	शुक्र	30/10/2048	सूर्य	26/10/2049
शुक्र	26/04/2048	सूर्य	20/11/2048	चंद्र	06/11/2049
सूर्य	04/05/2048	चंद्र	26/12/2048	मंगल	14/11/2049
चंद्र	16/05/2048	मंगल	20/01/2049	राहु	03/12/2049
मंगल	25/05/2048	राहु	24/03/2049	गुरु	20/12/2049
राहु	16/06/2048	गुरु	20/05/2049	शनि	09/01/2050
गुरु	06/07/2048	शनि	27/07/2049	बुध	27/01/2050
शनि	30/07/2048	बुध	25/09/2049	केतु	04/02/2050
बुध	20/08/2048	केतु	20/10/2049	शुक्र	25/02/2050

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
02/02/2040		08/01/2041		17/02/2042	
08/01/2041		17/02/2042		14/02/2043	
गुरु	18/03/2040	शनि	13/03/2041	बुध	09/04/2042
शनि	11/05/2040	बुध	09/05/2041	केतु	30/04/2042
बुध	29/06/2040	केतु	02/06/2041	शुक्र	30/06/2042
केतु	19/07/2040	शुक्र	08/08/2041	सूर्य	18/07/2042
शुक्र	13/09/2040	सूर्य	29/08/2041	चंद्र	17/08/2042
सूर्य	30/09/2040	चंद्र	01/10/2041	मंगल	07/09/2042
चंद्र	29/10/2040	मंगल	25/10/2041	राहु	31/10/2042
मंगल	18/11/2040	राहु	25/12/2041	गुरु	19/12/2042
राहु	08/01/2041	गुरु	17/02/2042	शनि	14/02/2043

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
25/02/2050		26/09/2050		22/02/2051	
26/09/2050		22/02/2051		12/03/2052	
चंद्र	15/03/2050	मंगल	05/10/2050	राहु	21/04/2051
मंगल	27/03/2050	राहु	27/10/2050	गुरु	11/06/2051
राहु	28/04/2050	गुरु	16/11/2050	शनि	10/08/2051
गुरु	26/05/2050	शनि	09/12/2050	बुध	04/10/2051
शनि	29/06/2050	बुध	31/12/2050	केतु	26/10/2051
बुध	29/07/2050	केतु	08/01/2051	शुक्र	29/12/2051
केतु	11/08/2050	शुक्र	02/02/2051	सूर्य	17/01/2052
शुक्र	15/09/2050	सूर्य	10/02/2051	चंद्र	18/02/2052
सूर्य	26/09/2050	चंद्र	22/02/2051	मंगल	12/03/2052

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
14/02/2043		15/06/2046		16/06/2047	
15/06/2046		16/06/2047		13/02/2049	
शुक्र	05/09/2043	सूर्य	04/07/2046	चंद्र	05/08/2047
सूर्य	05/11/2043	चंद्र	03/08/2046	मंगल	10/09/2047
चंद्र	14/02/2044	मंगल	24/08/2046	राहु	10/12/2047
मंगल	25/04/2044	राहु	18/10/2046	गुरु	29/02/2048
राहु	25/10/2044	गुरु	06/12/2046	शनि	05/06/2048
गुरु	05/04/2045	शनि	02/02/2047	बुध	30/08/2048
शनि	15/10/2045	बुध	25/03/2047	केतु	05/10/2048
बुध	05/04/2046	केतु	16/04/2047	शुक्र	14/01/2049
केतु	15/06/2046	शुक्र	16/06/2047	सूर्य	13/02/2049

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

1	मूलांक	1
4	भाग्यांक	9
1, 4, 8, 9	मित्र अंक	1, 4, 8, 9
3, 5, 6	शत्रु अंक	3, 5, 6
19,28,37,46,55	शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
रवि, सोम, मंगल	शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
सूर्य, चन्द्र, मंगल	शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
कन्या, कुम्भ	मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
कुम्भ, कर्क, कन्या	मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
गणेश	अनुकूल देवता	गणेश
मूंगा	शुभ रत्न	मोती
संगमूंगी	शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
मोती	भाग्य रत्न	पुखराज
ताम्र	शुभ धातु	रजत
रक्त	शुभ रंग	श्वेत
दक्षिण	शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
सूर्योदय के बाद	शुभ समय	संध्या
केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन	दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
मल्का	दान अन्न	चावल
घी	दान द्रव्य	दही

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

Mr.

जीवन रत्नः	मूंगा	धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	मोती	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
कारक रत्नः	माणिक्य	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
शुभ उपरत्नः	पुखराज	व्यावसायिक उन्नति, धन, सन्तति सुख

Ms.

जीवन रत्नः	मोती	कम खर्च, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	पुखराज	पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
कारक रत्नः	मूंगा	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
शभ उपरत्नः	गोमेद	सन्तति सुख, स्वास्थ्य
	माणिक्य	व्यावसायिक उन्नति, धन
	हीरा	भाग्योदय, धनार्जन, सुख

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	30/09/1991-06/03/1993
साढेसाती प्रथम ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढेसाती द्वितीय ढैया	22/07/2002-05/09/2004
साढेसाती तृतीय ढैया	05/09/2004-01/11/2006
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/09/2009-15/11/2011

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/01/2020-21/07/2022
साढेसाती प्रथम ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/05/2032-06/07/2034
साढेसाती तृतीय ढैया	06/07/2034-20/08/2036
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/06/2039-06/03/2041

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/07/2049-17/02/2052
साढेसाती प्रथम ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/07/2061-15/02/2064
साढेसाती तृतीय ढैया	15/02/2064-03/10/2065
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/08/2068-25/10/2070

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	बदनामी
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	धनार्जन

प्रथम चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढेसाती द्वितीय ढैया	22/07/2002-05/09/2004
साढेसाती तृतीय ढैया	05/09/2004-01/11/2006
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/09/2009-15/11/2011
अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/01/2020-21/07/2022

द्वितीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/05/2032-06/07/2034
साढेसाती तृतीय ढैया	06/07/2034-20/08/2036
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/06/2039-06/03/2041
अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/07/2049-17/02/2052

तृतीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/07/2061-15/02/2064
साढेसाती तृतीय ढैया	15/02/2064-03/10/2065
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/08/2068-25/10/2070
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/01/2079-18/08/2081

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धनार्जन
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	कम खर्च
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	पराक्रम
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

Mr.

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। परन्तु यह केवल आंशिक रूप में ही विद्यमान है। परिणामस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर आर्थिक स्थिति नाजुक रहती है जिस कारण थोड़ा बहुत कष्ट जातक को सहन करना पड़ता है और अपयश का भय बना रहता है।

इस योग के कारण जातक का विद्याध्ययन सामान्य रहता है और वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। परिवारिक सदस्यों से समय-समय पर थोड़ा बहुत मनमुटाव हो जाता है। मित्रगण समय पर धोखा एवं कष्ट पहुँचाते हैं। जीवन में आगे बढ़ने के लिए विशेष रूप से संघर्ष नहीं करना पड़ता है। सन्तान सुख में किंचित बाधा आती है। पुत्र आज्ञा का पालन करने में असमर्थ होता है। वह थोड़ा बहुत क्रूर एवं दुष्ट स्वभाव का होता है तथा मनमानी करता रहता है, जिससे जातक प्रभावित हो जाता है। सामाजिक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा में आंशिक नुकसान होता है और जातक भूत प्रेतों से कभी कभी परेशान हो जाता है।

इस योग के कारण जातक को कभी-कभी रोग व्याधि भी घेर लेती है जिससे स्वास्थ्य असामान्य हो जाता है और मानसिक रूप से चिन्तित होना पड़ता है। जातक अपनी वृद्धावस्था को लेकर चिन्तित रहता है और वह समय आने पर कष्ट को भोगता है। जातक परोपकार की भावना से ओतप्रोत रहता है, परन्तु लोग इसका नाजायज फायदा उठाते हैं, जिससे इन्हें थोड़ा बहुत क्षति ही मिलती है। जीवन यापन मध्यम रहता है और जातक पराक्रमहीन हो जाता है। सुखभोग का आंशिक अभाव रहता है। लेकिन इतना सब कुछ होते हुए भी जातक व्यापार में मनोभिलषित (इच्छित) सफलता प्राप्त करता है और जातक के जीवन में मान-सम्मान भी मिलता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।

6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

Ms.

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	श्वान	मार्जार	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	बुध	बुध	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	मिथुन	मिथुन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	आद्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	24.00		

कुल : **24 / 36**

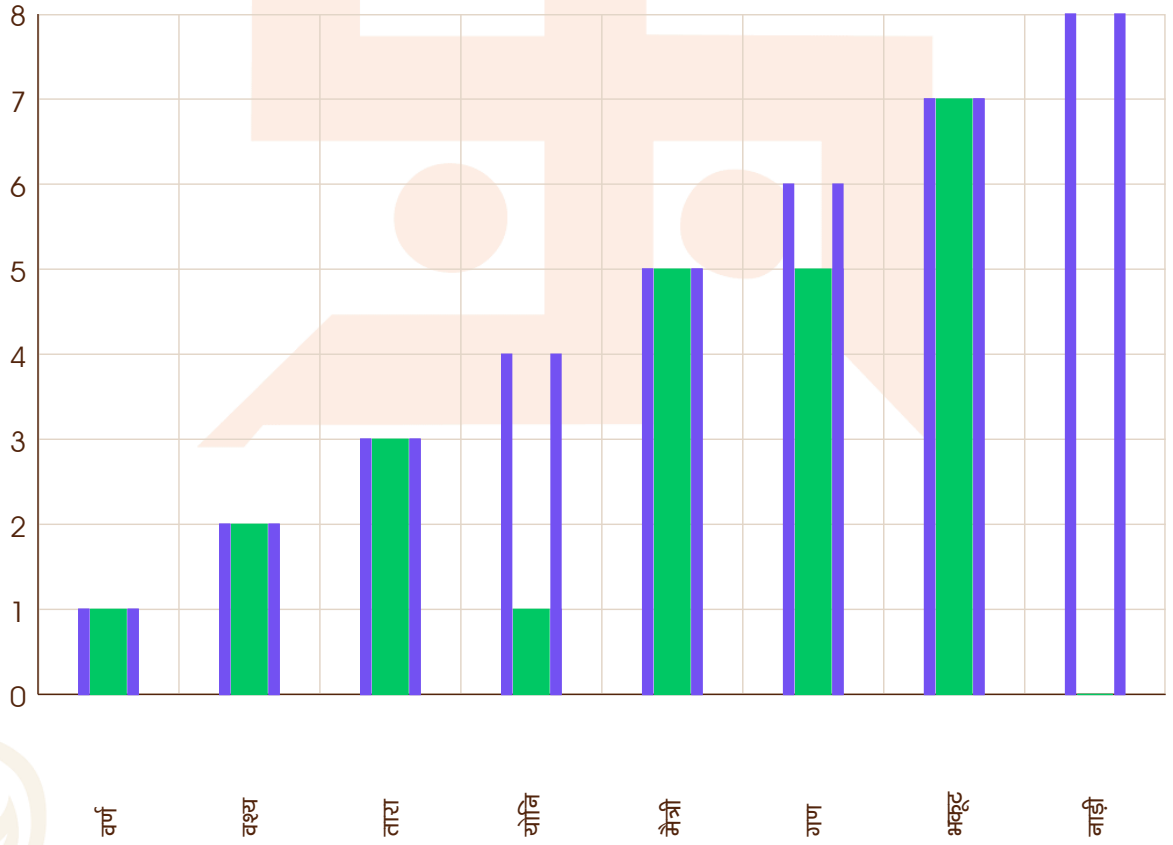

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकूट मिलान

नाड़ी दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के नक्षत्र भिन्न हैं तथा राशियां एक है।

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि Mr. का नक्षत्र आर्द्रा है।

Mr. का वर्ग सिंह है तथा Ms. का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गो में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr. और Ms. का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr. मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

Ms. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

ढप्ध्;थ्डत्मजतवह;0द्धझ0द्धझ क्योंकि मंगल Ms. कि कुण्डली में वक्री है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि Mr. कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Mr. तथा Ms. में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

Mr. का वर्ण शूद्र है तथा Ms. का वर्ण भी शूद्र है। इसमें दोनों का वर्ण समान है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। दोनों के स्वभाव, व्यवहार, दृष्टिकोण, पसन्द-नापसन्द में समानता रहेगी। साथ ही दोनों में इतना प्रेम होगा कि लगेगा कि दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने हों। दोनों के बीच गहरा प्रेम, सद्भाव, साहचर्य एवं पारस्परिक समझ बनी रहेगी। दोनों घर की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को उन्नत एवं सुदृढ़ बनाने के लिए साथ मिलकर कार्य करते रहेंगे।

वश्य

Mr. का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं Ms. का वश्य भी द्विपद अर्थात मनुष्य है अर्थात दोनों का वश्य समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान होगा। Mr. एवं Ms. दोनों के स्वभाव, गुण, व्यवहार पसंद/नापसंद तथा बुद्धि एवं ज्ञान एक समान होंगे। यह मिलान अति अनुकूल है तथा दोनों एक-दूजे के लिए ही बने हैं। दोनों के बीच प्रेम, सद्भावना एवं आपसी समझ एवं सामंजस्य की भावना बनी रहेगी। दोनों एक-दूसरे का सम्मान करेंगे तथा मिलजुलकर पारिवारिक दायित्वों का बोझ एक-दूसरे की सहायता एवं सहयोग करके साथ उठाते रहेंगे।

तारा

Mr. की तारा अतिमित्र तथा Ms. की तारा सम्पत है। अतः दोनों की तारा अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह विवाह वैवाहिक जीवन एवं परिवार के लिए चहुंमुखी समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। साथ ही दोनों एक-दूसरे के लिए काफी भाग्यशाली साबित होंगे। Mr. हमेशा Ms. के साथ मित्रवत व्यवहार करता रहेगा तथा उसे असीम प्रेम एवं प्यार देता रहेगा। इनके बच्चे भी काफी बुद्धिमान, भाग्यशाली, आज्ञाकारी एवं सफल होंगे।

योनि

Mr. की योनि श्वान है तथा Ms. की योनि मार्जार है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग- अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना का अभाव

ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Mr. एवं Ms. दोनों के राशि स्वामी समान हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि Mr. एवं Ms. दोनों के राशि स्वामी एक ही होने के कारण कुंडली मिलान में इसे अति उत्तम माना जाता है तथा पूरे 5 अंक प्रदान किए जाते हैं। जिसके कारण दोनों में असीम प्रेम बना रहेगा तथा साथ ही दोनों जीवन के हर क्षेत्र में एक-दूसरे का सहयोग करते रहेंगे। इनका प्रयास रहेगा कि वे स्वयं को आदर्श दम्पत्ति साबित कर सकें। इनके बच्चे योग्य, आज्ञाकारी, सफल एवं यशस्वी होंगे।

गण

Mr. का गण मनुष्य तथा Ms. का गण देव है। अतः यह मिलान उत्तम मिलान है। ऐसे मिलान में Ms. सतोगुणी होंगी तथा उसका स्वभाव दयालु, मृदु, सौम्य तथा कोमल होगा है जो कि एक महिला का नैसर्गिक गुण है तथा अन्य सभी लोग भी इन्हीं गुणों की अपेक्षा करेंगे। जबकि दूसरी ओर Mr. व्यावहारिक, मिलनसार, परिश्रमी, बुद्धिमान तथा महत्वाकांक्षी होंगे। जोकि इस भौतिकवादी, विश्व के पुरुष का नैसर्गिक गुण होता है। इन गुणों एवं योग्यताओं के कारण Mr. अपनी पत्नी, बच्चों, परिवार एवं समाज की हर अपेक्षा को पूरा करने में सक्षम रहेंगे तथा सभी इनसे खुश भी रहेंगे।

भकूट

Mr. एवं Ms. दोनों की राशि एक समान ही है इसलिये यह अति उत्तम मिलान है। ऐसा मिलान Mr. एवं Ms. तथा परिवार के चतुर्दिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है। इन्हें अनेक रूपों में ईश्वरीय कृपा जैसे - सौभाग्य, सम्पत्ति, समाज में मान-सम्मान तथा योग्य संतान आदि प्राप्त होगी।

नाड़ी

Mr. की नाड़ी आद्य है तथा Ms. की नाड़ी भी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। Mr. एवं Ms. दोनों की आद्य नाड़ी होने से, दम्पत्ति वात से संबंधित बीमारियों एवं रोगों के शिकार हो सकते हैं। ज्योतिषीय दृष्टि से ऐसे दम्पत्ति जिनकी नाड़ी एक ही हों, उनकी संतानें रक्ताल्पता, रक्त में हीमोग्लोबिन की कमी का शिकार हो सकते हैं। वे पढ़ाई एवं कार्य में संकेन्द्रण की कमी जैसी व्याधियों एवं परेशानियों के शिकार हो सकते हैं अथवा बचपन या

किशोरावस्था में ही उनकी मृत्यु हो सकती है।

मेलापक फलित

स्वभाव

Mr. और Ms. की जन्म राशि वायुतत्व युक्त मिथुन राशि है। अतः Mr. और Ms. के मध्य स्वाभाविक, मानसिक तथा भावनात्मक स्तर पर पूर्ण समानता रहेगी तथा एक दूसरे को पूर्ण स्नेह एवं सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगे फलतः इनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। इस प्रकार यह मिलान अतिउत्तम रहेगा।

Mr. और Ms. दोनों की राशियों का स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से वार्तालाप में दोनों अत्यधिक चतुर होंगे तथा अपनी बाक्पटुता से एक दूसरे को प्रभावित करेंगे। वे जीवन में समान सिद्धातों एवं मूल्यों का अनुपालन करते हुए अपना समय व्यतीत करेंगे।

Mr. और Ms. राशि परस्पर प्रथम प्रथम भाव में पड़ती है जो एक शुभ भकूट है। इसके प्रभाव से इनमें परस्पर स्नेह, सहयोग एवं समर्पण की भावना रहेगी तथा एक दूसरे के अस्तित्व का सम्मान करते हुए अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे। वे सच्चे मित्रों की भांति एक दूसरे के दोषों की उपेक्षा करते हुए शांति एवं प्रसन्नता बनाए रखेंगे तथा एक दूसरे की सुख सुविधाओं का भी पूर्ण ध्यान रखेंगे जिससे संबधों में मधुरता रहेगी।

Mr. और Ms. का वश्य मानव है। अतः Mr. और Ms. की अभिरूचियों में पूर्ण समानता रहेगी तथा शारीरिक एवं मानसिक आवश्यकताएं भी बराबर रहेंगी। साथ ही एक दूसरे की काम भावनाओं को समझने तथा शांति एवं सन्तुष्टि प्रदान करने में भी सफल होंगे जिससे दाम्पत्य जीवन का सुख एवं आनंद चरमोत्कर्ष सीमा पर रहेगा।

Mr. और Ms. का वर्ण शूद्र है। अतः कार्यक्षेत्र में दोनों गम्भीर एवं कर्तव्यपरायण रहेंगे तथा कार्य क्षमताएं भी समान होंगी फलतः कार्य क्षेत्र एवं आर्थिक स्थिति सर्वदा सुदृढ़ रहेगी।

धन

Mr. का जन्म अतिमित्र तथा Ms. का सम्पत नामक तारा में हुआ है। इसके प्रभाव से Ms. एक धनवान तथा भाग्यशाली महिला होंगी तथा Ms. के शुभ प्रभाव से उनकी आर्थिक स्थिति में नित्य वृद्धि होती रहेगी। भकूट का प्रभाव इनकी आर्थिक स्थिति पर सम रहेगा। अतः स्वपरिश्रम से ही इच्छित धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही मंगल का भी कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार Mr. और Ms. आरामदायक जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

Mr. और Ms. को लाटरी, सट्टे या अन्य स्रोतों से अनायास धन प्राप्ति की संभावना होगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के भौतिक संसाधनों का वे उपभोग करने में सफलता प्राप्त करेंगे। इसके अतिरक्त वे जायदाद तथा आभूषण आदि को भी अर्जित करने में समर्थ

होंगे।

स्वास्थ्य

Mr. और Ms. दोनों की नाड़ी आद्य है। यद्यपि प्रथम दृष्टि में यह नाड़ी दोष बनता है जिसके प्रभाव से Ms. को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है परन्तु इनके नक्षत्र अलग एवं राशि स्वामी एक ही है अतः इससे नाड़ी दोष भंग हो जाता है जिससे Ms. अल्प मात्रा में ही स्वास्थ्य संबंधी परेशानी की अनुभूति होगी परन्तु मंगल का Mr. के स्वास्थ्य पर अशुभ प्रभाव है जिससे वे गर्मी या रक्त विकार संबधी कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही धातु संबधी रोग या संभोग शक्ति में शिथिलता भी आएगी जिससे पारिवारिक जीवन में अशांति रहेगी। अतः इसके प्रभाव को न्यून करने के लिए हनुमानजी की पूजा, तथा मंगलवार का उपवास करना चाहिए। वैसे ऐसी स्थिति में विवाह करने की उपेक्षा करनी चाहिए।

संतान

संतति के दृष्टिकोण से Mr. और Ms. का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म के मध्य भी पर्याप्त अंतर रहेगा फलतः उनका उचित पालन पोषण का अवसर प्राप्त होगा परन्तु इनकी कन्या संतति पुत्र संतति से अधिक संख्या में उत्पन्न होगी।

Ms. का प्रसव सामान्य रूप से सम्पन्न होगा तथा उसमें किसी प्रकार की अतिरिक्त परेशानी या समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा तथापि सावधानी वश Ms. नियमित रूप से डाक्टरी परीक्षण इत्यादि समय समय पर करवाती रहें। इससे गर्भावस्था का समय सामान्य रहेगा तथा प्रसव काल में बिना किसी समस्या के सुंदर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में समर्थ होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ तथा शांति की अनुभूति करेंगी।

Mr. और Ms. बच्चों की व्यवहार कुशलता तथा बुद्धिमता से प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे भी अपनी योग्यता से अपने क्षेत्र में निरंतर उन्नति मार्ग पर अग्रसर होंगे। उनके सदगुणों से अन्य सामाजिक जन भी प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगे Mr. और Ms. अपने बच्चों की श्रद्धा तथा आज्ञाकारी भाव से गौरवान्वित। होंगे। साथ ही बच्चे भी माता पिता की आज्ञा का पूर्ण पालन करेंगे तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध कोई भी कार्य नहीं करेंगे। इससे Mr. और Ms. का पारिवारिक जीवन सुख शांति एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Ms. के सास से प्रायः अच्छे संबध रहेंगे। यद्यपि उनकी सास अन्य जनों के मामलों में कम ही हस्तक्षेप करने वाली महिला होंगी तथापि उनके कुछ सिद्धांत Ms. के लिए अनुकरणीय हो सकते है। साथ ही इन दोनों के मध्य कोई विशेष समस्या या मतभेद नहीं रहेंगे।

Ms. अपने कुशल व्यवहार मधुर वाणी एवं सेवा भाव से ससुर को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही ननद एवं देवरों के साथ भी उनके संबध मित्रता पूर्ण रहेंगे तथा उनको पूर्ण सहयोग एवं स्नेह प्रदान करेंगी। अतः उनका दिल जीतने में सफल

रहेंगी।

इस प्रकार Ms. के प्रति उनके सास ससुर का दृष्टि कोण आत्मयीता से पूर्ण रहेगा तथा घर में उसे पूर्ण सुख सुविधा तथा स्नेह प्रदान करेंगे।

ससुराल-श्री

Mr. तथा उनकी सास के संबधों में सामान्यतया मधुरता ही रहेगी। साथ ही आपस में किसी प्रकार के मतभेद या तनाव के भाव की न्यूनता रहेगी। वे अपनी सास के प्रति श्रद्धा तथा सम्मानजनक व्यवहार रखेंगे तथा उन्हें अपनी माता के समान ही आदर प्रदान करेंगे। साथ ही सपत्नीक वह समय समय पर ससुराल के लोगों से मिलने जाया करेंगे।

लेकिन ससुर के साथ में Mr. के संबध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा आयु में पर्याप्त अंतर के कारण दोनों के मध्य काफी वैचारिक विभिन्नता तथा अन्य मतभेद रहेंगे परन्तु यदि परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता का प्रदर्शन किया जाय तो इनमें न्यूनता आ सकती है। साथ ही साले एवं सालियों से Mr. के संबध अच्छे रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग, स्नेह तथा सहानुभूति प्राप्त होगी एवं परस्पर मित्रता का भाव रहेगा। इस प्रकार ससुराल के पक्ष का दृष्टिकोण Mr. के प्रति उत्साहवर्द्धक नहीं रहेगा तथा सामंजस्य से ही इसमें अनुकूलता वनी रहेगी।

अंक ज्योतिष फल

Mr.

आपका जन्म दिनांक एक होने से आपका मूलांक एक होता है। मूलांक एक के प्रभाववश आप एक स्थिर विचारधारा के व्यक्ति हेंगे। अपने निश्चय पर दृढ़ रहेंगे। जीवन में आप जब भी किसी को वचन इत्यादि देंगे उन्हें निभाने की पूर्ण कोशिश करेंगे। इच्छा शक्ति आपकी दृढ़ रहेगी एवं आप अपने मन संबंधों में, मित्रता के संबंधों में स्थायित्व रहेगा। लम्बे समय तक जो भी विचार बना लेंगे उनका पालन करने की निरंतर कोशिश करेंगे। आपके प्रेमएवं स्थायी बनें रहेंगे। यदि किसी कारणवश आपका किसी से विवाद या शत्रुता होती है तो ऐसी स्थिति में शत्रु या विवादित व्यक्ति से भी आपका मन मुटाव दीर्घकाल तक बना रहेगा।

मानसिक स्थिति आपकी स्वतंत्र विचारधारा की होने से आप पराधीन रहकर कार्य करने में असुविधा महसूस करेंगे। आप किसी के अनुशासन में कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करना अधिक पसंद करेंगे। आपकी निरंतर कोशिश एवं महत्वाकांक्षा रहेगी कि आप जो भी कार्य करें वह निष्पक्ष एवं स्वतंत्र हो, उस कार्य में किसी का भी हस्तक्षेप आपको मंजूर नहीं होगा।

मूलांक एक का स्वामी सूर्य ग्रह होने के कारण सूर्य से संबंधित गुण कमोवेश मात्रा में आपके अंदर मौजूद रहेंगे। इसके प्रभावश दूसरों का उपकार, उपचार करने की प्रवृत्ति आपके अंदर प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहेगी। सामाजिक क्षेत्र में आप सूर्य के समान ही प्रकाशित होना पसंद करेंगे। सामाजिक संगठनों में मुखिया का पद पाने की आपकी चाहत बनी रहेगी। जोकि आप अपनी मेहनत एवं लगन से प्राप्त करेंगे।

Ms.

आपका जन्म दिनांक 28 है। दो एवं आठ के योग से एक आपका मूलांक होता है। मूलांक एक का स्वामी सूर्य ग्रह है। अंक दो का चन्द्र तथा आठ का शनि है। इन तीनों ही ग्रहों का संयुक्त प्रभाव आपके जीवन में आयेगा।

मूलांक एक का स्वामी सूर्य जीवनदाता है एवं ब्रह्माण्ड में स्थिर ग्रह है। अन्य सभी ग्रह तो सूर्य के चक्कर लगाते हैं। अतः सूर्य ग्रह के प्रभाववश आप एक स्थिर प्रकृति की महत्वाकांक्षी, उदीयमान, प्रतिभाशाली महिला के रूप में पहचानी जायेंगी। आप स्वतंत्र विचार धारा की धनी होंगी। पराधीन कार्य करने में असुविधा महसूस होगी। आप प्रत्येक कार्य को स्वतंत्रता पूर्वक निष्पक्ष संपादन करने की हिमायती रहेंगी। इससे आपको प्रतिद्वन्दियों के विरोध का सामना करना पड़ेगा। आप स्थायी एवं दीर्घ कालीन संबंध बनाने पर विश्वास करेंगी। आपकी कोशिश हमेशा यही रहेगी कि जब भी आप किसी के साथ मित्रता, व्यापारिक, सामाजिक, राजनैतिक अथवा प्रेम, रोमांस, इत्यादि के जो भी संबंध बनाऐं उनमें स्थायित्व रहे।

सूर्य जिस तरह प्रकाशित ग्रह है। उसी भाँति आप भी अपने जीवन में सदा

प्रकाशित रहना पसन्द करेंगी। समाज वर्ग विशेष में मुखिया की भूमिका आप बखूबी निभाने की क्षमता रखेंगी। अपनी मेहनत के बल पर आप सभा-सोसायटी, संगठनों इत्यादि में प्रमुख पद को प्राप्त करेंगी।

अंक दो के स्वामी चन्द्र के कारण आपमें कल्पनाशीलता अच्छी रहेगी। आप जो भी सृजन करेंगी उसमें मौलिकता रहेगी। अंक आठ का स्वामी शनि ग्रह के प्रभाव से कभी-कभी आपके अन्दर नैराश्य भाव जाग्रत होगा। आलस्य में वृद्धि होगी और बनते हुये कार्यों में रुकावटें आयेंगी।

Mr.

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय अचानक होगा। आपके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन के हिमायती होंगे एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना आपकी आदत में शुमार होगा। आप रूढ़ि वादिता से थोड़े दूर तथा आधुनिक होंगे।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझेंगे। आपके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा आप अचानक चर्चित होंगे। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार-बार का परिवर्तन आपकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से आपको सबक लेना होगा कि भाग्य आपका परिवर्तनशील है। अतः आपको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यों से दूर रहना या सोच-समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

Ms.

भाग्यांक नो का स्वामी मंगल ग्रह को माना गया है। यह ग्रह मण्डल का सेनापति है। रक्त वर्ण का क्षत्रियोचित गुणों का है। इसके प्रभाव से आप स्वतंत्ररूप से रोजगार- व्यापार के क्षेत्र में तरक्की करेंगी। साहस भरे कार्यों से आपका भाग्योदय होगा। आप ऐसे क्षेत्र में अपना रोजगार प्राप्त करेंगी, जहाँ आपकी हुकूमत चलती रहे। मुखिया, नायक, अगुआ के रूप में कार्य करना आपको हमेशा अच्छा लगेगा।

रोजगार के क्षेत्र में आप अपनी स्वतंत्र विचारधारा के द्वारा महत्वपूर्ण उन्नति को प्राप्त करेंगी। यांत्रिक कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। एकाधिकार पूर्ण कार्य क्षेत्र आपकी प्रथम पसन्द रहेंगे और आपकी कोशिश रहेगी कि आपने जो कार्यक्षेत्र अपने जीवन यापन हेतु चुना है उसमें किसी का भी हस्तक्षेप न हो । विरोध, बिना वजह का हस्तक्षेप आप बर्दास्त नहीं कर पायेंगी। यांत्रिकी कार्य, चिकित्सा, सेना, संगठन, सामाजिक क्रिया कलापों में आप गहरी रुचि प्रदर्शित करेंगी।

लग्न फल

Mr.

ज्योतिषीय संरूपण आकृति से यह परिलक्षित हो रहा है कि आपका जन्म जयेष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में वृश्चिक लग्न में हुआ था। वृश्चिक लग्नोदय काल धनु राशि का नवमांश एवं मीन राशि का द्रेष्काण भी उदित था। आपका जन्म कालिक प्रभाव यह सूचित कर रहा है कि आप अपना विचार तो किसी अन्य कार्य के सम्बन्ध में रखते हैं, परंतु आप उद्देश्य के विपरीत कार्य सम्पादन करते हैं। आपके जीवन का लक्ष्य है कि आप पर्याप्त मात्रा में धनोपार्जन कर लें ताकि अपना आनन्दमय जीवन सुखपूर्वक बिता सके।

आपके बाहरी भाव से ऐसा परिदृश्य हो रहा है कि आप उच्चकोटि के धार्मिक प्राणी हैं। आप वार्ताक्रम में यह आश्वस्त कर देते हैं कि वस्तुतः क्या ठीक अथवा क्या गलत हैं। आपका आचरण धार्मिक है तथा आप उच्चस्तरीय धार्मिक प्राणी हैं। परन्तु आपकी आन्तरिक भावना यह है कि आप विपरीत बातों के प्रति अपना धार्मिक उपदेश प्रदान करें। वास्तव में आपका झुकाव धन प्राप्ति की ओर रहती हैं। आपके मन में धन प्राप्ति के प्रति प्रबल उत्कंठा रहती हैं कि अपने जीवन का सम्पूर्ण आनन्द प्राप्त करें।

आप किसी भी प्रकार की अभद्रता पूर्ण कार्य-कलाप को त्यागने के लिए सक्षम हैं। आप पूर्ण शिक्षित, कुशाग्रबुद्धि के चालाक व्यक्ति हैं। आपमें यह विशेषता विद्यमान है कि आप जनसामान्य को अपनी ओर आकृष्ट कर लेते हैं। क्योंकि आपमें भाषा के प्रति अभिरूचि रहती है। आप काव्य-कला और सामान्य भाषा के ज्ञाता है। आपके लिए व्यवसायों में अनुकूल प्रेस, प्रकाशन, विज्ञापन, प्रचार, पुस्तकों का प्रकाशन तथा वाद्य यंत्र का निर्माण कार्य उपयुक्त है। यदि आपकी अभिरूचि हो तो आप अभियंत्रिकी कार्य भी सम्पादन कर सकते हैं।

आपको अच्छी प्रकार से यथेष्ठ धन प्राप्ति के सभी सुन्दर सुअवसर प्राप्त होंगे। परन्तु आप बहुतायत में धन का व्यय भी करेंगे। आप चाहते है कि जनसामान्य के दृष्टिकोण में प्रभावशाली दृश्य हों तथा मूल्यवान साज शय्याओं से युक्त घर सुसज्जित दिखें तथा आधुनिक सौन्दर्य से युक्त हो।

आप प्रेम प्रसंग में भी कुछ उपयुक्त हो सकते हैं। आप अपने जीवन संगिनी के प्रति श्रद्धा रखते हुए अत्यधिक द्रवित हो जाते हो। परन्तु यदि वह अस्वस्थ्यता प्रदर्शित करती है तो आप इसे भाग्य की विडम्बना समझकर अन्य स्त्री के साथ सम्बन्ध स्थापित करने को उद्यत हो जाते हो तथा इसे दुखद अनुभव करते हो तथा इसे संभावित घटना समझकर परित्याग करते हो। आप अपनी जीवन संगिनी के चयन के पूर्व आप अपने घरेलू कार्य-क्रम को विधिवत सम्पादित करते रहेंगे। आप अपने उत्तम जीवन-संगिनी के चयन एवं उत्तम तारतम्यता हेतु उस स्त्री का चयन करें जिसका जन्म वृश्चिक, कर्क, वृष, कन्या अथवा मकर राशि में हुआ हो।

आपका वासनात्मक उन्माद आपके स्वास्थ्य को समस्याग्रस्त बना सकता है। जिससे आपका गुप्तांग प्रभावित हो जायगा। अतः रोमांचकारी सीमा पर सावधानी पूर्वक चलें।

इसके अतिरिक्त अन्य रोग यथा बवासीर एवं ट्यूमर रोग से भी आपका स्वास्थ्य अद्योगति को प्राप्त कर सकता है। अतः आपके लिए उचित मार्ग यह है कि आप अपने स्वास्थ्य के प्रति पूर्ण सतर्क रहें, अन्यथा आपके जीवन के 13 वें 27 वें एवं 49 वें वर्ष में गंभीर स्वास्थ्य बाधा उपस्थित हो जाएगी। यदि आप सुनियोजित ढंग से समुचित सतर्कता बरतें तो उपरोक्त रोगों से सुरक्षित रह सकते हैं।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग, नारंगी, लाल, पीला एवं क्रीम रंग है। परंतु आप सफेद, हरा एवं नीले रंगों का परित्याग करे।

आपके लिए अंकों में अनुकूल 1, 2, 3, 4 एवं 9 अंक अनुकूल एवं ग्राह्य है। परंतु अंक 5, 6 एवं 8 अंक अव्यवहारणीय है।

असाप्ताहिक दिनों में आपका भाग्यशाली दिन रविवार, सोमवार, एवं मंगलवार, है। आपके लिए वास्तव में शुक्रवार, बुधवार एवं शनिवार का दिन अनुकूल नही है।

Ms.

आपका जन्म पुनर्वसु नक्षत्र के चत्तुर्थ चरण में कर्क लग्न, कर्क नवमांश एवं कर्क राशि के द्रेशकाण में हुआ है। जन्मकाल वर्गोत्तम गुण से युक्त एवं अनुकूल जन्म लग्नोदयादि उदित था जिसके प्रभाव से आप भाग्यशाली, अनेक अनुकूलताओं से युक्त, आरामदायक जीवन व्यतीत करनेवाली है। समाज में आपकी स्थिति समृद्धियुक्त एवं जीवन का श्रेय वर्गोत्तम का प्रभाव भगवान की देन प्रमाणित करता है।

आपके जीवन का मुख्य सबक यह है कि आप मस्तिष्क में यह बात सोच लें कि आप निश्चित रूप से उन्नति प्राप्त करेंगी एवं आप किसी भी विषय अथवा कार्य योजना पर निश्चित समय पर निर्णय लेकर, कार्यरूप देना, यह आपका स्वाभाविक जन्मजात विशेषता है। यदि आप तत्क्षण कार्य की सुनिश्चितता नहीं प्राप्त कर सकी तो परिणामस्वरूप अनेकानेक सुअवसर का लाभ आपको हस्तगत नहीं हो सकेगा। अस्तु आपको दृढ़तापूर्वक चिन्तन करके कार्य कला नीति लागू करनी चाहिए। ताकि आप लाभ प्राप्ति के परिणाम के अनुसार विजय श्री प्राप्त कर सकें।

आपको दो अन्य अपेक्षित सावधानी के सम्बन्ध में ध्यान देना आवश्यक है। आप जितनी संख्या में सन्तान की प्राप्ति चाहेंगे-उतनी संतान का सुख अवश्य प्राप्त होगा।

आपके शरीर का उपरी भाग बहुत उन्नत एवं प्रभावशाली रहेगा। जबकि कुछ वर्षों के बाद उदर बड़ा होकर शरीर का निचला भाग दुर्बल हो जायगा। यदि आप बैल की भॉति उदर बढ़ाने की प्रवृति का त्याग करें। अन्य दूसरी बात यह है कि आप अपने पारिवारिक आकृति के सम्बन्ध में सचेत रहे। क्योंकि छोटा परिवार द्वारा उत्तम सुख प्राप्त होता है। इसलिए परिवार के प्रति समर्पित एवं पति के साथ अनुकूलतापूर्वक सम्बंधित रहकर परिवार नियोजन के सिद्धान्त के अनुसार अधिक मात्रा में सन्तानोत्पत्ति पर नियंत्रण रख सकती हैं। यह स्वभाव आप दोनों में किसी का भी आपके पारिवारिक जीवन अथवा देशीय प्रथा के लिए ठीक नहीं है। यह झलक

आपके जन्म प्रभाव से परिलक्षित होता है।

आपके लिए उत्तम तो यह है कि आप समझौता पूर्वक सचेत रहकर पारिवारिक सुख एवं बच्चों के सुख एवं लाभ के लिए सुनिश्चित कर लें कि आपका परिवारिक जीवन नियंत्रित हो।

सामान्यतया आप पूर्णरूपेण स्वस्थ्य रहने के लिए सचेष्ट रहें, तथा स्वास्थ्य का सम्पोषण करती रहेंगी।

आप अपने स्वस्थ्य के लिए तथा कुछ रोगादि के प्रति सावधान रहें क्योंकि आप मूर्छा रोग, सफेद दाग, हिस्ट्रीया, फोड़ा फुन्सी तथा गले की दिक्कतें सम्बंधी रोग से आक्रान्त हो सकते हैं।

आपके लिए अनुकूल कर्म व्यवसायों में आयात-निर्यात, पर्यटन कार्य, ट्रान्सपोर्ट का कार्य तथा सामुदायिक कार्य करना उत्तम होगा। इसके अतिरिक्त कृषि कार्य, फैक्ट्री चलाना, यांत्रिक, रेस्टोरेन्ट खेल सामग्री सुरक्षा एवं पुलिस की नौकरी से सम्बंधित कार्य कर सकती हैं। आप राजनीति के लिए उपयुक्त एवं पूर्ण समर्थ है। सम्बंधित कार्य आपके लिए लाभदायक प्रमाणित होगा।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में शुक्रवार एवं शनिवार पूर्ण आनन्द प्रदायक नही होगा। मंगलवार, गुरुवार एवं सोमवार का दिन सफलता प्रदायक होगा। बुधवार का दिन चिन्तनीय एवं व्ययकारी होगा। परन्तु रविवार का दिन सचेत रहने योग्य है।

आपके लिए अंक 4 एवं 6 अंक अनुकूल एवं कम्पनशील है।

अंक 3 एवं 5 अंक आपके लिए प्रतिकूल है अतः इस अंक के व्यवहार का त्याग करें।

आपके लिए अनुकूल रंग सफेद एवं क्रीम रंग, पीला एवं लाल रंग प्रमाणित हो सकता है। हरा एवं ब्लू रंग का सर्वथा त्याग करें।

नक्षत्रफल

Mr.

आपका जन्म आर्द्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका शूद्र वर्ण, सिंह वर्ग, आद्य नाड़ी, श्वान योनि तथा मनुष्य गण होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का आधाक्षर "छ" होगा।

आप अपने जीवन काल में व्यस्तता या अन्य कारणों से भोजन समय पर लेने में प्रायः असमर्थ रहेंगे। आप में शारीरिक लावण्यता भी अल्प मात्रा में ही विद्यमान रहेगी। आपके स्वभाव में क्रोध की प्रबलता रहेगी तथा यदा कदा छोटी छोटी बातों पर आप अनावश्यक क्रोध का प्रदर्शन करेंगे साथ ही समाज में अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनके उपकार को अल्प मात्रा में ही स्वीकार करेंगे। दया एवं करूणा के स्थान पर कठोरता का भी प्रदर्शन करेंगे। तथा समीपस्थ सम्बन्धियों एवं आप प्रिय रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सहानुभूति प्राप्त होती रहेगी।

क्षुधाधिको रूक्षशरीरकान्ति बन्धुप्रियः कोपयुतः कृतघ्नः।
प्रसूति काले च भवेत्किलार्द्रा दयाद्रचेता न भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

आपमें चंचलता का भाव प्रबलरूप से विद्यमान रहेगा तथा आप किसी भी कार्य को स्थिर मन से करने में असमर्थ रहेंगे। साथ ही आप एक स्थान पर स्थिर नहीं रहेंगे तथा नित्य परिवर्तन की इच्छा करेंगे। आपके पास धनार्जन भी मध्यम रूप से ही होगा परन्तु शारीरिक बल से आप सर्वदा पूर्ण रहेंगे एवं अपने बाहुबल से समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आपकी शिक्षा भी मध्यम ही रहेगी परन्तु आचरण श्रेष्ठ रहेगा।

कृतघ्नः गर्वितोहीनः नरो पापरतः शठः।
आर्द्रानक्षत्र सम्भूतो धनधान्य विवर्जितः।।
मानसागरी

आपके मन में अभिमान का भाव भी विद्यमान रहेगा साथ ही आपको अत्यन्त परिश्रम से महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त होंगी। आपका सामान्य जीवन संघर्षमय रहेगा एवं परिश्रम पूवर्क आप जीविकार्जन करेंगे। अन्य लोगों के प्रति आपमें प्रेम का भाव भी रहेगा अतः सामाजिक जनों से आप सौहार्द अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे।

शठगर्वितः कृतघ्नो हिंस्रः पापश्च रौद्रर्क्षे।
बृहज्जातकम्

Ms.

आप पुनर्वसु नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध हैं। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मेष, गण देव, नाड़ी आद्य तथा योनि मार्जार होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम "ह" अक्षर से प्रारम्भ होगा यथा हरीश।

आपका स्वभाव अत्यन्त ही शान्त तथा सहनशील होगा। कठिन संकट की घड़ी में भी आपको किसी प्रकार की घबराहट या उतावलापन नहीं होगा। आप अपने जीवन में समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों के उपभोग करने वाले पुरूष होंगे। शारीरिक दृष्टि से आप अच्छे स्वास्थ्य से युक्त होकर गौरवर्ण के तथा सुन्दर होंगे। भाग्य बल पर आप खूब उन्नति करेंगे। समाज में आपकी लोकप्रियता आपके कल्याणकारी कार्यों के द्वारा रहेगी क्योंकि आप सभी वर्गो की भलाई के लिए कार्य करेंगे। साथ ही आप पुत्र तथा मित्रों से भी हमेशा युक्त रहेंगे।

शान्तः सुखी च सम्भोगी सुभगो जनबल्लभः।
पुत्रमित्रादिभिर्युक्तो जायते च पुनर्वसौ।।
मानसागरी

आप का स्वभाव अच्छा तथा चाल चलन उत्तम रहेगा। यदा कदा आपकी मति में दुष्टता का भाव उत्पन्न होगा फलस्वरूप आप दुष्कर्म करने की ओर प्रेरित होंगे। जीवन में आप हमेशा तृष्णा से आतुर रहेंगे तथा इससे आपकी तृप्ति कभी नहीं होगी। लेकिन सन्तोष का भाव भी आपके मन में रहेगा। किसी वस्तु या द्रव्य की अल्प प्राप्ति में ही पूर्ण रूप से सन्तुष्टि का अनुभव करेंगी।

दान्तः सुखी सुशीलो दुर्मेधा रोगभाक् पिपासुश्च।
अल्पेन च सन्तुष्टः पुनर्वसौ जायते मनुजः।।
बृहज्जातकम्

ज्ञानालोक से आप प्रकाशित रहेंगे तथा कठिन से कठिन विषयों का आपको ज्ञान रहेगा। समाज में आप धन तथा बल के प्रभाव से कीर्तिवान कहलाएंगे। आप लेखन कार्य के प्रति आकर्षित रहेंगे तथा कविता सृजन या रचना में आप सफलता प्राप्त करेंगे।

गूढात्मा च पुनर्वसौ धनबलविख्यातः कविः कामुकः।
जातकपारिजातः

आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा तथा शास्त्रों के ज्ञान प्राप्ति के लिए आप इनके अध्ययन में सतत् तत्पर रहेंगे। आप शुभ रत्न तथा सोने से बनाए गये गहनों से सुशोभित रहेंगे। दानशीलता का भाव भी आपके मन में व्याप्त रहेगा तथा द्रव्य एवं भूमि से भी आप युक्त रहेंगे।

प्रभूतमित्रः कृतशास्त्रयत्नः सद्रत्नचामीकरभूषणाढ्यः।
दाता धरित्री वसुभि समेतः पुनर्वसु यस्य भवेत्प्रसूतौ।

राशिफल

Mr.

आप मिथुन राशि में पैदा हुए हैं। अतः आपके नेत्र श्यामवर्ण के होंगे तथा बालों में घुंघरालापन होगा। आपके शरीर के सारे अंग सुन्दर, स्वस्थ एवं सुडौल रहेंगे। इसके साथ ही नासिका भी उन्नत होगी । शास्त्रों के अध्ययन तथा ज्ञान प्राप्त करने की आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा अपने परिश्रम से शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करेंगे। आप दूत अथवा सन्देशवाहक के कार्य में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित रहेंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीव्र एवं तीक्ष्ण होगी । तीक्ष्णता के फलस्वरूप आप सम्मुख व्यक्ति के मनोभावों को जानने में सफल रहेंगे। आपका सामाजिक व्यवहार अत्यन्त ही विनम्र तथा विनय शील रहेगा फलतः समाज से यथोचित मान सम्मान प्राप्त करेंगे। वाणी आपकी श्रेष्ठ एवं प्रिय होगी जिससे श्रोता आपसे आकर्षित रहेंगे तथा आपकी प्रशंसा करेंगे। इसके अतिरिक्त आप हंसने तथा हंसाने के कार्य में भी निपुण होंगे तथा आपका हास्य प्रिय स्वभाव होगा। संगीत से आपका लगाव रहेगा तथा नृत्यशास्त्र के आप अच्छे जानकार होंगे।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुत्रिचद् मूर्धजः पटुमति हास्योड्गित द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रुचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।

बृहज्जातकम्

आपकी हथेली मत्स्य चिन्ह से सुशोभित रहेगी तथा नसें शरीर से बाहर दृष्टिगोचर होंगी। आपका रूप सुन्दर एवं दर्शनीय होगा। काव्य लेखन की प्रतिभा स्वाभाविक रूप से आप में रहेगी तथा अपने जीवन में समस्त सांसारिक तथा भौतिक सुखसंसाधनों से युक्त होकर आप अपना जीवन व्यतीत करेंगे। सौभाग्य से आप युक्त रहेंगे लेकिन स्त्री से हमेशा पराजित रहेगें एवं उसके वश में रहेंगे।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।

सारावली

आयु आपकी पूर्ण रहेगी तथा लम्बे समय तक आप जीवन का उपभोग करते रहेंगे। आप भ्रमण या यात्रा के प्रति रूचिशील रहेगे तथा सुदूर क्षेत्रों की यात्रा या भ्रमण रूचि रहेगी। साथ ही घर के अन्दर रहकर भी शान्ति का अनुभव करेंगे।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।

जातकपरिजातः

समाज में आप अत्यन्त लोकप्रिय रहेंगे। सर्वजनों से आपके मैत्रीपूर्ण संबंध होंगे तथा वे आपका पूर्ण सम्मान करेंगे। स्त्री वर्ग के आप प्रिय होंगे तथा सभी आपको प्रिय एवं आदरणीय समझेंगे। आप अपनी योग्यता, प्रतिभा तथा सद्व्यवहार से समाज में गौरवान्वित होंगे।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

आप अपने भाषण या लेखन कार्य में कठिन शब्दों का प्रयोग करेंगे परन्तु लोग उसे सुगमता पूर्वक ग्रहण करेंगे। आप अपने बन्धुजनों, रिश्तेदारों तथा अन्य सामाजिक लोगों के कल्याण कारी कार्यों में हमेशा तत्पर रहेंगे। आपकी प्रवृति पित तथा कफ से युक्त रहेगी तथा आचरण श्रेष्ठ रहेगा।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आप की आखें चंचल होंगी। संगीत तथा नृत्य से आपका विशेष आकर्षण रहेगा तथा आपकी कीर्ति आपके सद्व्यवहार तथा धनैश्वर्य एवं विद्धता के कारण दूर दूर तक विख्यात रहेगी। शरीर की आपकी पूर्ण लम्बाई होगी तथा भाषण देने में आप अति कुशल होंगे। आप जिस चीज का संकल्प करेंगे उसे पूर्ण करके ही छोडेंगे चाहे उसके लिए आपको कितना ही परिश्रम क्यो न करना पडे। साथ ही आप न्यायवादी भी होंगे।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां दोनों शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, सोमवार तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य 2,7,12 तिथियों, स्वाती नक्षत्र परिघयोग में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रय आदि शुभकार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही सोमवार तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी विशेष ध्यान रखें।

यदि आपके लिए अशुभ समय चल रहा हो मानसिक उद्विग्नता या शारीरिक

व्याकुलता हो रही हो, व्यापार या नौकरी में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको नियमित रूप से प्रातः तथा सायं काल गणेश जी के शुभ दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार का व्रत रखना चाहिए। साथ ही पन्ना, हरा वस्त्र, गुड़, घी आदि पदार्थो का दान करना चाहिए तथा बुध के तांत्रीय मंत्र के 17000 जप करवाने चाहिए। इससे शुभ फलों में अभिवृद्धि होगी तथा अशुभ फलों का नाश होगा।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।

Ms.

आप मिथुन राशि में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप की आखें थोड़ी लालिमा लिए हुए श्याम वर्ण की तथा बाल घुंघराले होंगे। आपके शरीर के सारे अंग कोमलता लिए पुष्ट तथा सुडौल होंगे एवं नासिका भी उन्नत होगी। विभिन्न प्रकार के शास्त्रों के अध्ययन में आप अभ्यासरत रह कर ज्ञान प्राप्त करेंगी। दूतिका कार्य या सन्देशों के आदान प्रदान में आप निपुणता का प्रदर्शन करेंगी। आप अत्यन्त तीव्र बुद्धि की होंगी तथा अपनी इसी बुद्धि के द्वारा अपने समीपस्थ अन्य जनों की चित्त की बातों को जानने में सफल सिद्ध होंगी। समाज के लोगों से आपका व्यवहार अत्यन्त ही विनयशील एवं प्रशंसनीय रहेगा। आप मधुर वाणी बोलेंगी जिससे अन्य जनों को प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। आप हंसने तथा हंसाने की शौकीन होंगी तथा आजीवन हास्य युक्त रहेंगी। संगीत से आपका अनन्य प्रेम रहेगा तथा नृत्य शास्त्र की आप विशेषज्ञा होंगी।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुञ्चिद् मूर्धजः पटुमति हास्योङ्गित द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।
बृहज्जातकम्

आपके हाथ में मछली का चिन्ह हो सकता हैं। आपके कद की ऊँचाई पूर्ण होगी। लेखन कार्य में नैसर्गिक रूप से आपकी रूचि रहेगी तथा काव्य सृजन में आप सफलता प्राप्त करेंगी। आप अपने जीवन में समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखसंसाधनों की उपभोग करने वाली होंगी। साथ ही पुरूषवर्ग को आप अपने वश में रखने में सफलता प्राप्त करेंगी।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।
सारावली

आप दीर्घजीवी होंगी तथा सदैव हास्य प्रिय रहेंगी। हंसने तथा हंसाने के कार्य को आप प्रिय समझेंगी। आप घूमने या यात्रा करने में भी उत्सुक रहेंगी तथा घर में रहकर भी सुख

की अनुभूति प्राप्त करेंगी।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

आपकी मित्रता तथा सामाजिक क्षेत्र विस्तृत रहेगा तथा इनमें आप खूब लोकप्रिय रहेंगी। पुरूषों के प्रति आपका तीव्राकर्षण रहेगा तथा उनके मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय समझी जाएंगी। साथ ही आप अपनी प्रतिभा तथा सत्कार्यों से समाज में कीर्ति तथा गौरव भी अर्जित करेंगी।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

आप अपने लेखों तथा भाषणों में श्लिष्टयुत स्पष्ट वाक्यों का अधिकांश प्रयोग करेंगी जिससे सामान्य जन भी समझने में सफल रहेंगे आप अपने बन्धुवर्ग के तथा समाज के सभी वर्गों की भलाई के लिए हमेशा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी प्रवृति पित्त कफ से युक्त होगी एवं चाल चलन उत्तम तथा प्रशंसनीय रहेगा।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आपके नेत्र हमेशा चंचलता से युक्त रहेंगे। संगीत एवं नृत्य के प्रति आप समर्पित रहेंगी तथा अपने अच्छे व्यवहार, अच्छे कार्य तथा धन एवं वैभव के द्वारा कीर्ति को प्राप्त करने में सफलता अर्जित करेंगी। अपने मन में एक बार आप जिस बात को सोच लेंगी उसे पूर्णरूप से सम्पन्न करके ही रहेंगी। यह आपके दृढ़संकल्प का परिचायक होगा। इसके साथ ही भाषण देने की कला में भी आप विशेष चतुर होंगी।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आपके लिए आषाढ मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां कृष्ण तथा शुक्ल दोनों पक्षों की, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, सोमवार तृतीय प्रहर तथा धनु राशि स्थित चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले हैं। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों

को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही सोमवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें अन्यथा हानि योग बनता हैं। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधा आदि या अन्य अशुभ फल घटित हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको प्रातः तथा सायं काल नित्य नियमित रूप से श्री गणेश जी के दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार का भी उपवास करना चाहिए ऐसा करने से आपके अशुभ प्रभाव दूर होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। साथ ही पन्ना, हरा वस्त्र, मिश्री, घी, गुड़ आदि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

Mr.

आपके जन्मसमय में लग्न में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यता वृश्चिक लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट होते हैं। इनमें शारीरिक बल की प्रचुरता रहती है अतः परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा ये अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। स्वभाव से ये निर्भीक होते हैं तथा विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में इनकी छवि रहती है। परिवार में ये श्रेष्ठ होते हैं तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग में सम्माननीय समझे जाते हैं। ये अत्यधिक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होते हैं तथा आत्मिक शक्ति की भी इनमें प्रबलता रहती है।

धन संग्रह के प्रति भी इनकी रूचि रहती है तथा धर्नाजन में नैतिक सीमा का अनुपालन कम ही करते हैं। इसके अतिरिक्त विज्ञान या गणित में इनकी विशेष रूचि रहती है तथा इस क्षेत्र में उनको सफलता एवं यश की प्राप्ति होती है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट व्यक्ति होंगे तथा स्वपराक्रम एवं परिश्रम से सांसारिक कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे इससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा जीवन में धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख पूर्वक उनका उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। निर्भीकता तथा लगनशीलता का भी भाव आप में विद्यमान होगा। अतः कार्य क्षेत्र में आप उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। विज्ञान गणित या मेडिकल के क्षेत्र में आप विशिष्ट उन्नति या सफलता अर्जित कर सकते हैं।

आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगे। धनसंग्रह में भी आपकी रूचि होगी परन्तु इससे आपके समीपस्थ लोग असुविधा महसूस करेंगे। आपके महत्वपूर्ण कार्य भावना से नहीं बल्कि बुद्धि द्वारा संचालित होंगे। अतः सामान्य रूप से आप प्रसन्नतापूर्वक आप अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में लग्नेश मंगल की राशि की प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगे मानसिक शांति भी बनी रहेगी। पराक्रम एवं तेजस्विता का भाव प्रारम्भ से ही आप में विद्यमान होगा तथा इन गुणों से आप अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। इससे आप धनैश्वर्य अर्जित करेंगे तथा अन्य भौतिक सुख संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिनका आप आनंदपूर्वक उपभोग करेंगे परन्तु यदा कदा तेजस्विता के स्थान पर उग्रता या क्रोध का असमय प्रदर्शन करेंगे। इससे आपको अनावश्यक समस्याएं एवं परेशानियां उत्पन्न होगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव अवश्य रहेगा परन्तु धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। मित्र वर्ग में आप लोकप्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे आपको वांछित सहयोग एवं लाभ समय समय पर मिलता रहेगा इस प्रकार आप स्वस्थ बलवान पराक्रमी तेजस्वी धनसंग्रह कर्ता एवं परिश्रमी पुरूष होंगे तथा

स्वपुरूषार्थ से जीवन में इच्छित सुख संसाधनों को अर्जित करके प्रसन्नता पूर्वक उनका उपभोग करेंगे।

Ms.

आपके जन्म समय में लग्न में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। सामान्यतया कर्क लग्न के जातक शांत दृढ़प्रतिज्ञ एवं परिश्रमी होते हैं तथा अपने सांसारिक महत्व के कार्यकलापों को पराक्रम एवं दृढ़ता से सम्पन्न करते हैं। प्रकृति से ये भावुक होते हैं तथा प्रेम एवं स्नेह की इनमें निश्छल भावना होती है। जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों को ये स्वपराक्रम एवं योग्यता से अर्जित करते हैं तथा सुख पूर्वक उसका उपभोग करने में समर्थ रहते हैं। धर्म के प्रति इनके मन में श्रद्धा का भाव रहता है तथा समाज एवं देश सेवा के कार्यों में ये रूचिशील रहते हैं। अन्य जनों की आंतरिक भावनाओं को समझने में चतुर होते हैं। साथ ही राजनीति या सरकारी क्षेत्र में किसी सम्मानित पद को अर्जित करके मान प्रतिष्ठा एवं यश की प्राप्ति करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपकी बुद्धि तीव्र होगी तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी जिससे इनमें आपको इच्छित सफलता मिलेगी तथा आपके उन्नति मार्ग सर्वत्र प्रशस्त रहेंगे। आर्थिक रूप से भी सुदृढ़ रहेंगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभार्जन होता रहेगा।

जीवन में यद्यपि आपको उतार चढ़ाव का सामना करना पड़ेगा परन्तु परिश्रम पराक्रम एवं साहस से आप ऐसी स्थितियों का सामना तथा समाधान करने में समर्थ होंगी। साथ ही आपको भौतिक सुख संसाधनों की भी प्राप्ति होगी एवं इनका आनंदपूर्वक उपभोग करने में समर्थ होंगी।

मंगल की लग्न में स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु यदा कदा मन में परेशानी रहेगी लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपके सांसारिक महत्व के सभी कार्य पराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न होंगी। अतः इनमें आपको अवसरानुकूल सफलता मिलेगी जिससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे। सुख संसाधनों को अर्जित करने की आपके मन में तीव्र अभिलाषा रहेगी तथा न्यूनाधिक मात्रा में परिश्रम एवं पराक्रम से इनकी प्राप्ति में आपको सफलता मिलेगी।

आप में कर्तव्यपरायणता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा ईमानदारी से अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगी। इससे कार्य क्षेत्र में आपकी प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको इच्छित आदर प्रदान करेंगे। आप में विचारशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा एवं चतुराई से अन्य जनों को प्रभावित करेंगी। आपकी पुत्र संतति प्रसिद्ध होगी तथा इनसे आपको सुख एवं सहयोग मिलता रहेगा।

धर्म के प्रति आपकी रूचि रहेगी परन्तु धामिक कार्यकलाप एवं अनुष्ठान अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगी। मित्र वर्ग में भी आपका प्रभाव एवं लोकप्रियता रहेगी। साथ ही

अपने उत्तम कार्यों से समाज में इच्छित मान सम्मान प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि प्राप्त करेंगी तथा सुख संसाधनों से युक्त रहकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

इस प्रकार आप पराक्रमी शांत कर्तव्य परायण एवं उत्कृष्ट कार्यकलापों को सम्पन्न करने वाली महिला होंगी तथा समाज एवं कार्य क्षेत्र में इच्छित प्रतिष्ठा एवं यश प्राप्त करके प्रसन्नता पूर्वक जीवन यापन करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

Mr.

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आत्मविश्वासी पुरूष होंगे तथा अपने विचारों को बिना किसी हिचकिचाहट के प्रदर्शन करते हुए अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे इससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। जीवन में व्यवधानों तथा समस्याओं का आप दृढ़ता पूर्वक सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा इसका अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपको जो भी रूचिकर लगेगा वही आप अन्य जनों के समक्ष कहेंगे तथा इस बात की कोई चिन्ता नहीं करेंगे कि अन्य जनों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा या वे किस रूप में उसे ग्रहण करेंगे। आप अपने समीपस्थ संबंधियों से औपचारिक संबंध रहेंगे परन्तु अवसरानुकूल उनसे घनिष्ठ संबंध स्थापित करने के भी उत्सुक रहेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा। साथ ही वाणी अत्यंत ही मधुर एवं ओजस्वी रहेगी तथा अन्य जनों को वाणी द्वारा प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। सांसारिक धनऐश्वर्य एवं भौतिक सुख संसाधनों से आप युक्त रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा समय समय पर आप धार्मिक कार्य कलापों तथा उत्सव का भी आयोजन करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप स्थिर धन के स्वामी वाहन आदि से युक्त तथा यशस्वी पुरूष होंगे। रस युक्त पदार्थ आपको प्रिय लगेंगे तथा धर्म की उन्नति के लिए सर्वदा अपना योगदान प्रदान करते रहेंगे।

Ms.

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में सिंह राशि उदित हुई है जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप कम बोलना पसंद करेंगी तथा सामान्यतया शान्त रहना ही आपको अच्छा लगेगा। आप आवश्यकता एवं अवसरानुकूल ही सार्थक वार्तालाप करेंगी। जीवन में वैभव शाली पदार्थों की प्राप्ति तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यो को सम्पन्न करने में सर्वदा तत्पर रहेगी। आपकी प्रवृति शीघ्र क्रोधित होने की रहेगी परन्तु शीघ्र क्रोधित होकर शीघ्र शान्त भी हो जाएंगी। परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी तथा यत्नपूर्वक पारिवारिक जनों को सुख सुविधाएं प्रदान करेंगी। आपको पैतृक सम्पति की भी प्राप्ति होगी तथा अन्य मूल्यवान धातु एवं द्रव्यों से भी युक्त रहेंगी।

जमीन जायदाद संबंधी लाभ भी आप समय समय पर प्राप्त करती रहेंगी। साथ ही गृह एवं वाहन आदि का स्वामित्व भी आपको प्राप्त होगा। आपकी वाणी स्पष्ट रहेगी तथा अन्य जन आपकी मृदुवाणी से प्रभावित तथा आकर्षित रहेंगे। आपके ठोस तर्को से सभी लोग आपसे सामान्यतया सहमत रहेंगे। परिवार की सुख शान्ति पर आप यथोचित व्यय करेंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा धार्मिक कार्य कलापों का भी समय समय पर आयोजन करती रहेंगी। परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों का पालन करने में भी समर्थ रहेंगी।

इस प्रकार आप तथा भाग्यशाली, परोपकारी, धार्मिक प्रवृति से युक्त तथा समाज में सम्मान जनक स्थान प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

Mr.

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कुम्भराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप सासंसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगे तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपके पास आधुनिक सुख संसाधनों की बहुलता रहेगी। आप एक वैभव एवं ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में भी आपका यथोचित स्तर बना रहेगा एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति की आपको आवश्य प्राप्ति होगी। भाईयों के प्रभाव एवं सहयोग से भी आप वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति को प्राप्त करेंगे। इससे आपके ऐश्वर्य तथा वैभव में वृद्धि होगी तथा परिश्रमी एवं पराक्रमी स्वभाव होने के कारण अन्यत्र से भी वांछित धन-सम्पत्ति अर्जित करेंगे। आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से शीध्र एवं विशिष्ट लाभ के योग बनते हैं। अतः अचल सम्पत्ति पर ही अधिक निवेश करना चाहिए।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा आपका घर सामान्य रूप से आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से परिपूर्ण होगा तथा इसकी स्वच्छता एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए आप यथोचित प्रबंध करेंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे परंतु संबंधों में औपचारिकता ही होगी। इसके अतिरिक्त वाहन से भी युक्त होंगे तथा युवावस्था से ही इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी तेजस्वी, शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा वह भौतिकतावादी भी होगी एवं परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा। परिवार में सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा एवं अवसरानुकूल उनसे आप वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति कर सकते है। आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आप भी सुख दुख में उनको पूर्ण सहयोग देंगे लेकिन परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में मधुरता कम ही होगी अतः ऐसी स्थितियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा लेकिन छोटी कक्षाओं में आप अच्छे अंक अर्जित करके परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर लेंगे लेकिन स्नातक परीक्षा उतीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम एवं बुद्धिमता का प्रदर्शन करना पड़ेगा। यदि आप किसी तकनीकी पाठ्यक्रम में डिप्लोमा करें तो यह आपके लिए उत्तम रहेगा तथा उसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। अतः आपको तकनीकी पाठ्य क्रम पर ही विशेष केन्द्रित रहना चाहिए।

Ms.

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में सर्व सुखों से आप युक्त होंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों को भी अर्जित करने में समर्थ होंगी। आप एक वैभवशाली महिला होंगी तथा समाज में अपना अनुकूल स्तर बनाए रहेंगी।

आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगी। आपको माता के द्वारा विशिष्ट सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा इससे आपके वैभव एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी। विवाह के बाद पति के सहयोग एवं प्रभाव से भी आप वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगी।

आपको जीवन में उत्तम एवं विस्तृत क्षेत्र में स्थित गृह भी प्राप्ति होगी तथा सुख पूर्वक इसमें निवास करेंगी। आपका घर सर्व प्रकारेण आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में व्यक्तिगत रूप से तत्पर होंगी तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगी। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे एवं आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त आपको उत्तमवाहन की भी प्राप्ति होगी जिसका आप आनंद पूर्वक उपभोग करने में समर्थ होंगी।

आपकी माता जी शिक्षित बुद्धिमान एवं तेजस्वी महिला होंगी तथा पारिवारिक जनों पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा एवं सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट स्नेह का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको वांछित नैतिक एवं आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा वं सम्मान का भाव रखेंगी तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

विद्या अध्ययन के क्षेत्र में आप परिश्रमी होंगी तथा स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने में सफल होंगी। प्रारंभिक कक्षाओं से ही आप अच्छे अंक अर्जित करेंगी तथा स्नातक परीक्षा काफी अच्छे अंकों से उतीर्ण करेंगी। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य को उज्ज्वल बनाने में समर्थ होंगी। आप व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा में वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ हो सकती है क्योंकि आपमें परिश्रम तथा बुद्धिमता दोनों भाव विद्यमान है। इसके अतिरिक्त मित्र संबंधी एवं अन्य लोग भी आपकी सफलता से प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

Mr.

आपके जन्म समय में पंचम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने सम्स्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं सकारात्मक निर्णय लेने की भी क्षमता विद्यमान होगी जिससे आपको वांछित सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा आपके इस गुण से अन्य जन भी आपसे प्रभावित होंगे। आप अपनी तीव्र बुद्धि से कठिन से कठिन समस्याओं का भी उचित समय पर समाधान करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रूचि कम ही होगी लेकिन आधुनिक विज्ञान, आयुर्विज्ञान या तकनीकी क्षेत्र में आप पूर्ण रूचि का प्रदर्शन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इन क्षेत्रों में आप कोई शोध कार्य या नवीन सिद्धांत के प्रतिपादन में भी समर्थ हो सकते है। इस प्रकार अपनी विद्वता से आप समाज में सम्मान जनक स्तर अर्जित करने में समर्थ होंगे।

पंचमभाव में मीन राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में यद्यपि आपकी रूचि कम होगी परन्तु आपका प्रेम भावुकता से हीन होगा तथा इससे आदर्शवादिता, नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टि कोण होगा एवं भावनात्मक आकर्षण की ही प्रबलता होगी। अतः आप प्रेम- प्रसंग में सफल भी हो सकते है।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति की अधिकता होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण सम्मान एवं आदर का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में भी समान्यतया वे तत्पर होंगे परन्तु वे स्वतन्त्र प्रवृति के होंगे अतः यदा-कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बिना माता-पिता की सलाह लिए भी सम्पन्न कर सकते है। लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चपहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास बना रहेगा। वृद्धावस्था में बच्चों से आपको प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सेवा एवं सहयोग भी मिलता रहेगा जिससे आप वृद्धावस्था में सुख की अनुभूति करेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे बुद्धिमान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी सिद्ध होंगे तथा प्रारम्भ से ही इस क्षेत्र में विशेष उन्नति का प्रदर्शन करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा दीक्षा का आधुनिक परिवेश में प्रबन्ध करेंगे तथा किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे जिससे वे जीवन में अच्छी उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करके आपकी आकाक्षांओं को पूर्ण करेंगे। इसके अतिरिक्त वे अपने कार्यो में निपुण एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य सामाजिक जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगे तथा वे भी उन्हें वांछित स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली समझे जायेंगे।

Ms.

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा राहु भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी तथा आपके कार्यो में स्पष्ट रूपेण बुद्धिमता की छाप होगी लेकिन तीक्ष्णता के भाव में यदा-कदा अल्पता आयेगी जिससे शीघ्र निर्णय लेने या किसी आसन्न समस्या का समाधान करने में असुविधा की अनुभूति करेंगी। वैदिक साहित्य एवं दर्शन के प्रति आपकी रूचि कम ही होगी तथापि आधुनिक वैज्ञानिक विषयों में पूर्ण रुचि का प्रदर्शन करके परिश्रम पूर्वक इसमें वांछित ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगी। पाश्चात्य साहित्य की ओर भी आपका आकर्षण रहेगा तथा इसका रूचि पूर्वक अध्ययन करके इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगी।

पंचमभावस्थ राहु के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में आपकी रूचि होगी तथा इसको आप मनोरंजन के रूप में भी स्थापित कर सकती हैं। राहु की स्थिति से इसमें आदर्श एवं मर्यादा का स्वरूप कम ही होगा जिससे आपको समय समय पर अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः ऐसी स्थितियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

राहु की पंचमभाव में स्थिति के कारण पुत्र सन्तति प्राप्ति में आपको विलम्ब होगा तथा कन्या सन्तति अधिक हो सकती है। आपके बच्चे पराक्रमी, तेजस्वी एवं व्यावहारिक होंगे। अतः जीवन में अपने इन्हीं गुणों से उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। लेकिन वे स्वतन्त्र प्रवृति के होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को अपनी ही इच्छा से सम्पन्न करेंगे तथा इसमें अन्य किसी की सलाह लेना आवश्यक नहीं समझेंगे। यदा-कदा आपका कहना भी कम ही मानेंगे। लेकिन उनकी ऐसी प्रवृति से आपको विशेष चिन्तित नहीं होना चाहिए क्योंकि वे अपनी इसी प्रवृति से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। लेकिन बच्चों से आपको विशेष अपेक्षाएं नहीं करनी चाहिए तथा वृद्धावस्था के लिए पूर्ण धन संचित करके रखना चाहिए जिससे यदि बच्चे आपकी उपेक्षा करे तो उसका कोई विशेष प्रभाव आपके ऊपर न हो। इसके अतिरिक्त माता की अपेक्षा पिता से उनका विशेष लगाव रहेगा।

अध्ययन के क्षेत्र में आपके बच्चे परिश्रम से ही वांछित सफलताएं अर्जित करेंगे। यद्यपि आप उनकी शिक्षा-दीक्षा का पूर्ण प्रबन्ध करेंगी तथा आधुनिक परिवेश में उनको शिक्षा प्रदान करेंगी लेकिन व्यावहारिक वृति होने होने के कारण वे अन्य स्रोतों से आय अर्जित करके सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी। इसके अतिरिक्त यदा-कदा अन्य सामाजिक जनो से भी उनका वाद-विवाद होता रहेगा लेकिन आप स्थिति को अनुकूल बनाने में समर्थ होंगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

Mr.

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है सामान्यतया सप्तम भाव में वृष राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील परिश्रमी धनाढ्य एवं बुद्धिमान होता है। वह पराक्रमी साहसी तथा व्यावहारिक होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की होंगी परन्तु तेजस्विता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा। सांसारिक कार्य कलापों को वह व्यावहारिकता एवं बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। नैतिकता के प्रति भी उनकी रूचि होगी जिससे सुख संसाधनों के प्रति भी लालयित होगी। अपने महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता एवं विधिपूर्वक सम्पन्न करेंगी। कर्तव्य परायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी देखने में सुंदर एवं लालिमा लिए गौरवर्ण की होंगी तथा उनका कद भी मध्यम होगा शारीरिक संरचना की दृष्टि से उनका सौन्दर्य आकर्षण होगा एवं अन्य अंग प्रत्यंग भी पुष्टता एवं सुडौलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व के आकर्षण में वृद्धि होगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए समयानुसार व्यायाम या योग क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगी। वृष राशि के प्रभाव से संगीत एवं कला में भी रूचिशील होगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं का संग्रह करेंगी।

सप्तम भाव में वृष राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथोचित समय पर होगा। आपका विवाह बंधु या संबन्धियों के माध्यम से होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव रहेगा। साथ ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को एक दूसरे की सहयोग तथा सहमति से सम्पन्न करेंगे।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार से होगा एवं आर्थिक एवं सामाजिक रूप से वे समृद्ध होंगे। विवाह में आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके सामान्य संबंध होंगे तथा भविष्य में भी उनसे नैतिक तथा आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित सेवा करेंगी। देवर एवं ननद भी उनके सद्व्यवहार से प्रसन्न होंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे ।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति होगी।

Ms.

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है सामान्यतया मकर राशि की सप्तम भाव में स्थिति के प्रभाव से जातक का सहयोगी चंचल वात प्रकृति एवं धनवान होता है। साथ ही वह सुशील सहिष्णु एवं बुद्धिमान होता है तथा अपने कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति चंचल तथा सुशील स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त कार्यो को शांत मन से सम्पन्न करेंगे वह एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने उत्कृष्ट कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। कला एवं संगीत के प्रति भी उनकी रूचि होगी। साथ ही उनमें कर्तव्य परायणता का भाव रहेगा एवं समाज तथा परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे जिससे आपके सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपके पति गौर वर्ण की आकर्षक एवं सुंदर व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। उनकी शारीरिक संरचना भी उत्तम रहेगी तथा पुष्टता एवं सुडौलता से उनके सौन्दर्य की अभिवृद्धि होगी। जलीय राशि मकर के प्रभाव से उनमें आयु के साथ साथ स्थूलता भी आ सकती है। साथ ही कला एवं सुंदर वस्तुओं के प्रति भी उनके मन में प्रबल आकर्षण होगा।

आपका विवाह संबन्धियों के सहयोग से सम्पन्न होगा तथा महिला संबंधियों का इसमें विशेष योगदान रहेगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे के मनोभावों का पूर्ण आदर करेंगे। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आपसी सहमति तथा सहयोग से पूर्ण करेंगे। इससे संबंधों में मधुरता रहेगी तथा परस्पर विश्वास का भाव भी बना रहेगा।

आपका विवाह सामान्य परिवार में होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से उनकी स्थिति साधारण रहेगी। सास ससुर से आपके सामान्य संबंध अच्छे रहेंगे तथाा वे भी आपको यथोचित स्नेह तथा नैतिक सहयोग प्रदान करेंगे।

सास ससुर के प्रति आपके पति की पूर्ण सेवा तथा श्रद्धा की भावना रहेगी तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट नहीं होने देंगे। साले एवं सालियों को भी वह अपने मृदु व्यवहार एवं वाणी से प्रभावित तथा प्रसन्न रखेंगे तथा वे भी उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी एवं माता या अन्य मातृपक्ष के साथ साझेदारी से वांछित लाभ एवं उन्नति होगी तथा आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

Mr.

आपके जन्म समय में दशमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। साथ ही बृहस्पति भी दशमभाव में ही स्थित है। सिंह राशि अग्नि तत्व एवं बृहस्पति वायुतत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता रहेगी। साथ ही उन्नति के मार्ग पर आप अग्रसर होंगे। आप किसी स्वतंत्र कार्य को करने की भी इच्छा रखेंगे जिससे आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति हो सकती है।

सिंह राशि में दशम भावस्थ बृहस्पति के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षा विभाग, व्याख्याता शिक्षक, प्रोफेसर, न्यायाधीश, सचिव, सलाहकार, बैंक अधिकारी, पांडित्य, धर्मोपदेशक, व्यवस्थापक, प्रबंधक, कार्मिक विभाग तथा राजनीति में इच्छित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा आपके उन्नति मार्ग सर्वत्र प्रशस्त होंगे एवं अनावश्यक समस्याओं तथा कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए सुवर्ण आदि धातु का व्यापार, शेयर ब्रोकर या क्रय विक्रय, वित्त कम्पनी का स्वामित्व या पूंजी निवेश के द्वारा, संस्था का स्वामित्व एवं शैक्षणिक संस्थाओं के संचालन से वांछित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। साथ ही धार्मिक संस्थाओं से भी आप लाभान्वित हो सकते हैं। अतः यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में ही कार्य या व्यापार का प्रारंभ करें तो आपको इच्छित लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

दशमभाव में बृहस्पति के केन्द्रस्थ स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी तथा अपनी योग्यता के बल पर आप किसी सम्मानित एवं उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी अर्जित कर सकते हैं। इससे आपके यश में अभिवृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके यथोचित आदर प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आप किसी संस्था में सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य के रूप में भी कार्यरत हो सकते है जिससे आपको जीवन में सन्तुष्टि की अनुभूति होगी।

आपके पिता शिक्षित बुद्धिमान एवं आदर्श व्यक्ति होंगे तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। फलतः सभी लोग उनसे प्रभावित होंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव होगा तथा शिक्षा की वे उच्च स्तर पर व्यवस्था करके आपको आदर्श नागरिक बनाने के लिए यत्नशील होंगे। आपके कार्य क्षेत्र की उन्नति में भी उनका मुख्य सहयोग तथा योगदान रहेगा। आप भी अपने बुद्धिमता पूर्ण कार्य कलापों से पिता की मान प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी होगी साथ ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग लेंगे जिससे आप सामान्यतया सुख की अनुभूति करेंगे।

Ms.

आपके जन्म समय में दशम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। साथ ही सूर्य भी अपनी उच्चराशि में स्थित है। मेष राशि एवं सूर्य दोनों अग्नितत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा इसमें आप अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से निरन्तर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी। साथ ही आपको मानसिक सन्तुष्टि की भी प्राप्ति होगी।

सूर्य की अपनी उच्चराशि मेष में दशमस्थ स्थिति के अनुसार आपका आजीविका क्षेत्र प्रशासक, प्रबन्धक, सेना, पुलिस, मेडिकल, सरकारी क्षेत्र, ऊर्जा विभाग, राजनीति, प्रतियोगी परीक्षा द्वारा उत्तम कार्य क्षेत्र आदि होगा। साथ ही विज्ञान के क्षेत्र में भी आप विशिष्ट अनुसंधान या उपलब्धि अर्जित कर सकती है। अतः अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त विभागों एवं क्षेत्रों में ही कार्य करना चाहिए। यदि आप ऐसा करेंगी तो कार्य क्षेत्र में वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा अनावश्यक कठिनाइयों एवं समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए औषधि व्यापार, ऊनी वस्त्र तथा रत्न संबंधी कार्य विद्युत उपकरण इंजीनियरिंग उपकरण सरकारी ठेके, आदि से वांछित लाभ एवं धन अर्जित होगा। यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में अपना व्यापार प्रारंभ करेंगी तो इनमें आप उन्नति के शिखर पर पहुंचने में समर्थ होंगी तथा कार्य का विस्तार भी शीघ्र ही करेंगी। आपकी चहुंमुखी उन्नति को देखकर अन्य लोग आपके प्रसंसक होंगे। अतः आपको परिश्रम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने व्यापारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

सूर्य की स्वोच्चराशि एवं दिग्वली दशमस्थ स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको उच्च मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। साथ ही किसी उच्च पद पर भी आपकी नियुक्ति होगी जिससे सामाजिक यश में अभिवृद्धि होगी। आपको किसी धार्मिक, सामाजिक या शैक्षणिक संस्था में कोई उच्चपद मिल सकता है। इसके अतिरिक्त आपके प्रभाव को सभी लोग स्वीकार करेंगे एवं हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप जीवन में उच्च मान सम्मान प्रदान करके सुख एवं सन्तुष्टि के भाव की अनुभूति करती हुई अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

आपके पिता तेजस्वी, पराक्रमी एवं शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा समाज में सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही वे अन्य जनों के हित के लिए भी समय समय पर कार्य करने में तत्पर होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा वात्सल्य का भाव होगा एवं आपकी शिक्षा के प्रति वे पूर्ण सजग रहेंगे तथा उच्चस्तर पर इसकी व्यवस्था करेंगे। कार्य क्षेत्र में आप उनके प्रभाव से पूर्ण उन्नति एवं प्रसिद्धि प्राप्त करेंगी। साथ ही अपने कार्य कलापों से पिता के प्रभाव एवं मान सम्मान में वृद्धि करेंगी। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा एक दूसरे के साथ पूर्ण सामंजस्य होगा। इसके अतिरिक्त पिता की आप आज्ञाकारी पुत्री होंगी तथा उनकी आज्ञा या सलाह से ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करेंगी।

Mr.

एस्ट्रोग्राफ – 2025

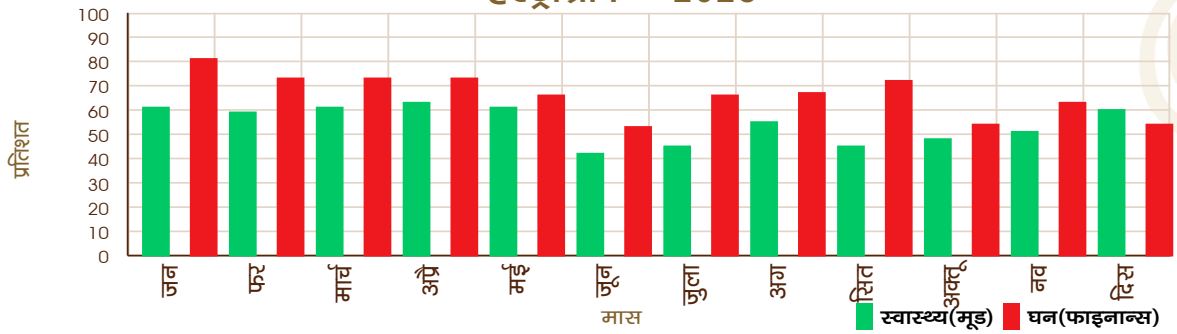

Ms.

एस्ट्रोग्राफ – 2025

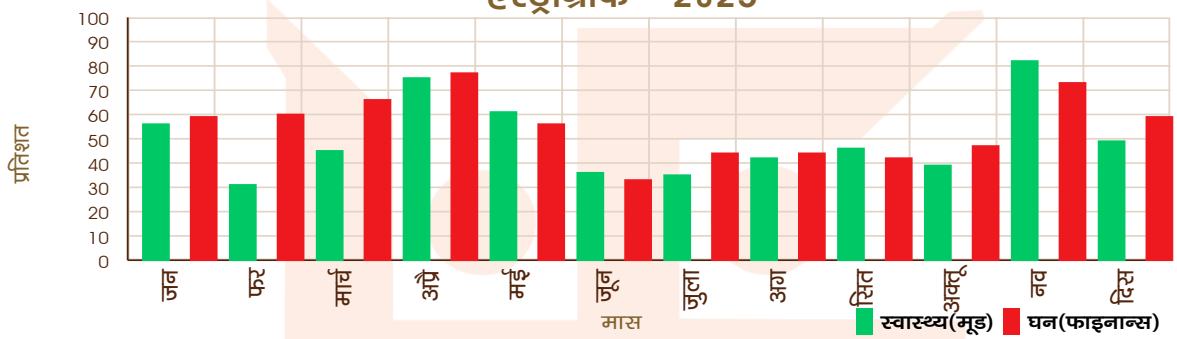

Mr.

एस्ट्रोग्राफ – 2026

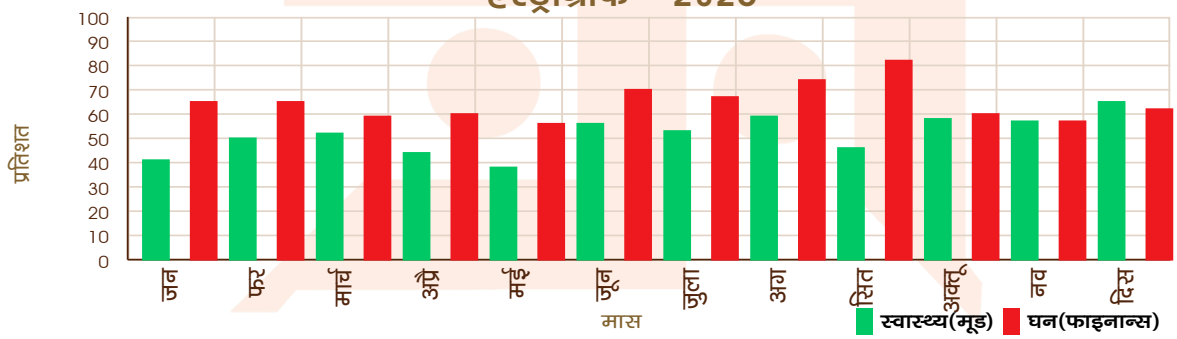

Ms.

एस्ट्रोग्राफ – 2026

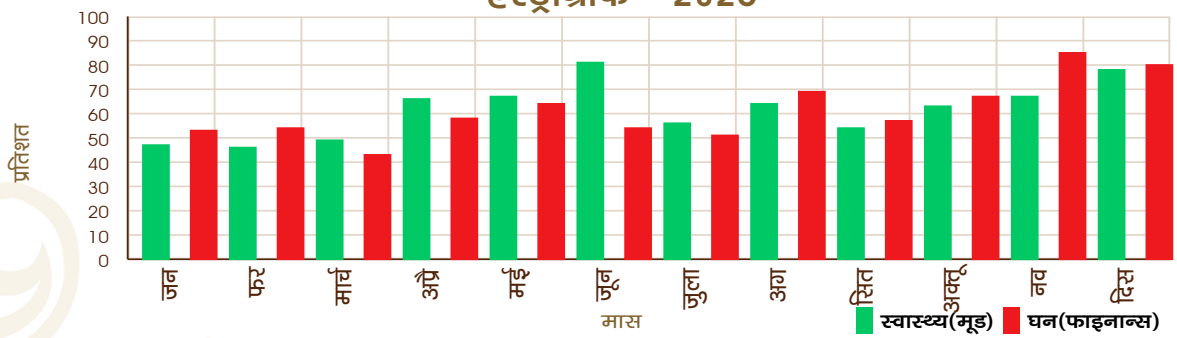

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

Mr.

एस्ट्रोग्राफ – 2027

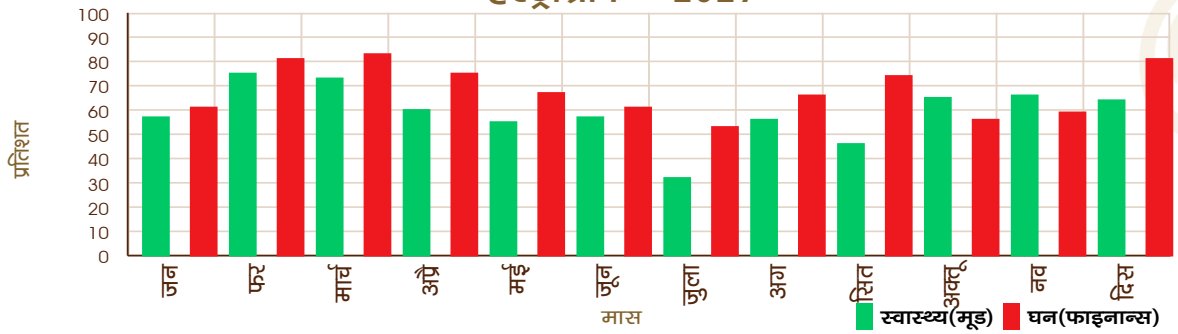

Ms.

एस्ट्रोग्राफ – 2027

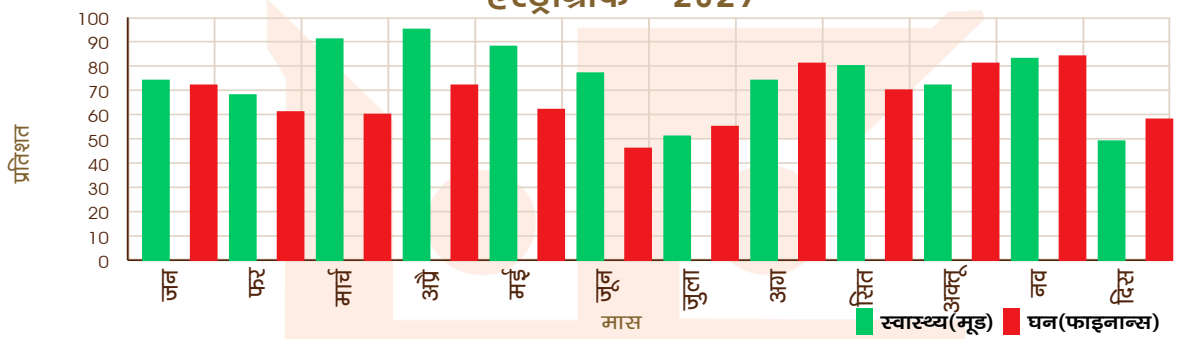

Mr.

एस्ट्रोग्राफ – 2028

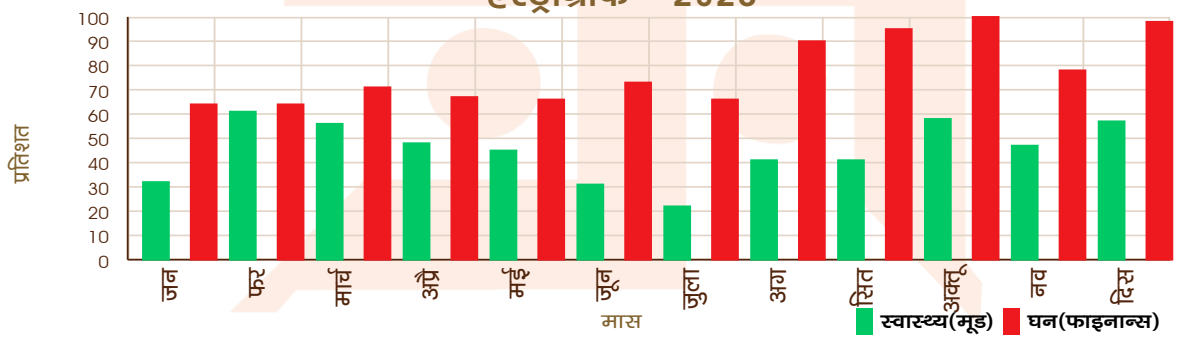

Ms.

एस्ट्रोग्राफ – 2028

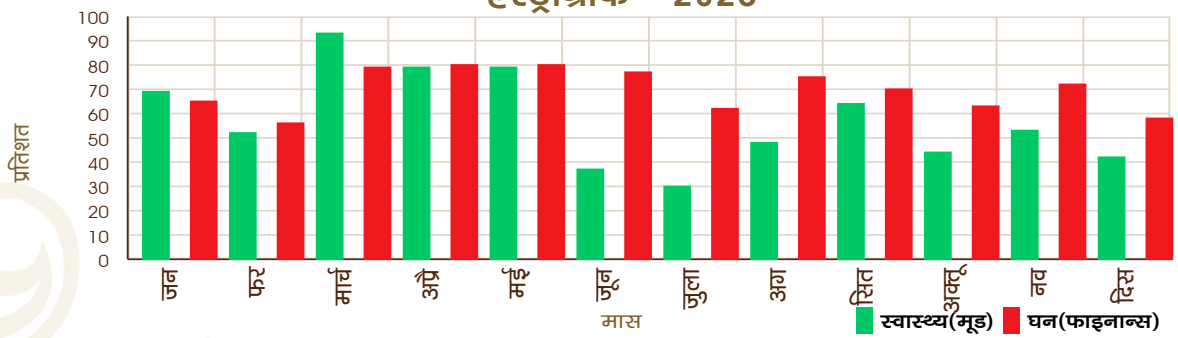

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

Mr.

एस्ट्रोग्राफ – 2029

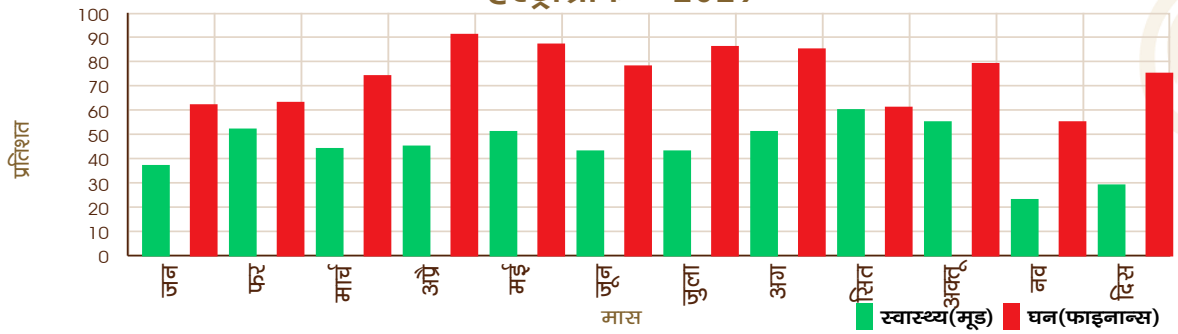

Ms.

एस्ट्रोग्राफ – 2029

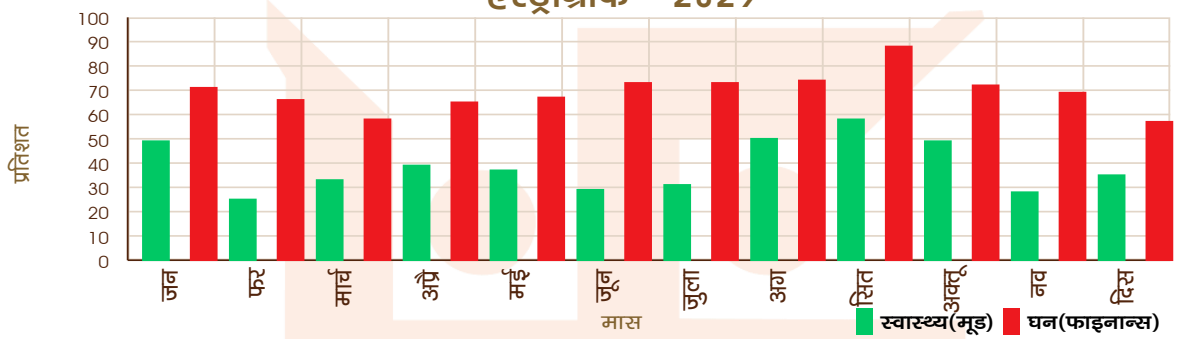

Mr.

एस्ट्रोग्राफ – 2030

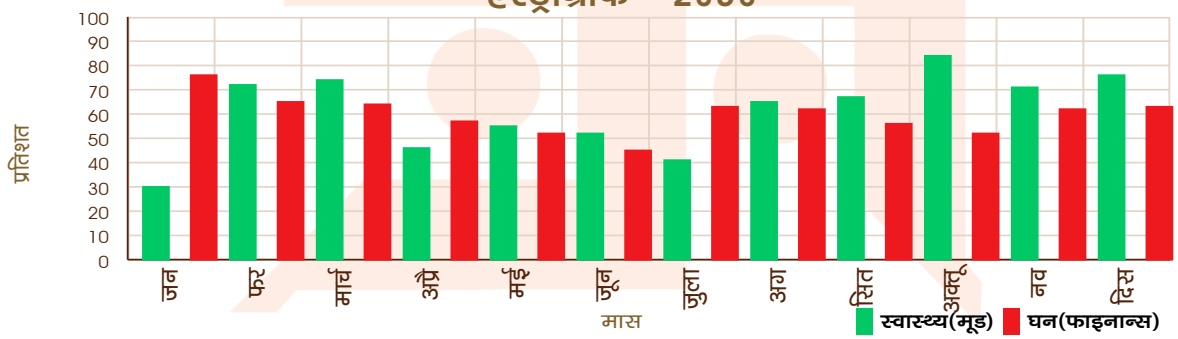

Ms.

एस्ट्रोग्राफ – 2030

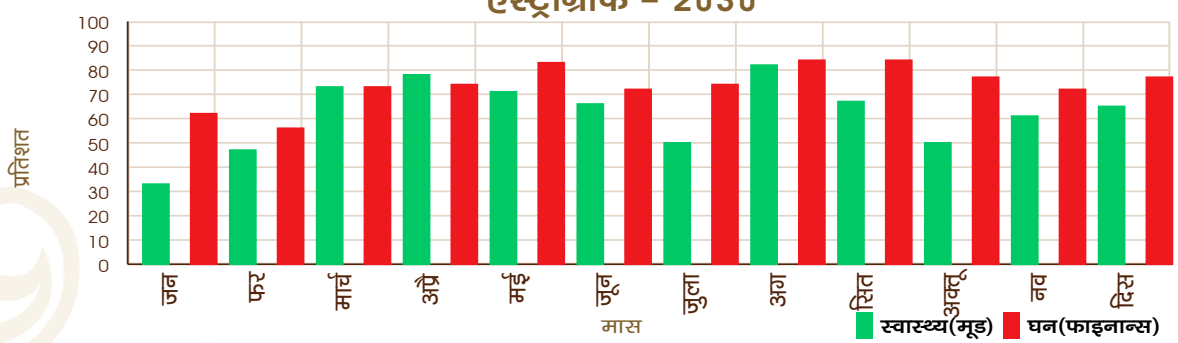

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com